જૈની-જૈની ભાઇ-ભાઇ

ગુજરાતી દિગંબર જૈન સમાજ મહાસંઘનું મુખપત્ર

LOKADHAR

RNI NO. MAH / GUJ / 2005 / 15912

લોકાધાર

સમાજ-સંપ્રદાય-રાષ્ટ્રની સેવામાં સંઘ-મહાસંઘ

તંત્રી: શ્રી પંકજ બી.શાહ

કાર્યાલય : શ્રી જૈન યુવા સંઘ, ૮મી ખેતવાડી, આર. કે. બિલ્ડીંગ નં.૩, મુંબઈ-૪૦૦ ૦૦૪. * સહતંત્રી: શ્રી દેવેન્દ્ર એસ. શાહ

ચિંતન

દાન એ ભગવાનનું ધર્મ છે

વોલ્યુમ: ૨૧, અંક:૧૦ સળંગ અંક : ૨૩૬ ઓક્ટોબર ૨૦૨૬, મુંબઈ કિંમત ₹૫, પાનાં : ૩૨

E-mail : jainyuvasangh.gdjsm@gmail.com • Website : https://www.gdjsm.org/

Spent in F.Y. 2025-26 (31-03-2026) as per following details Mumbai (Maharashtra) Zone)

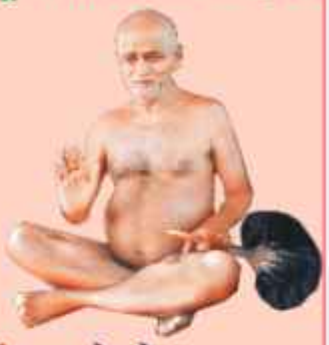
Sr. No.	Name of Company from whom Donation Received	Total Amount Spent	Scholarship to Students	Health Care to Patients	Natural Calamities Flood Relief Expense	Note, Text Books, GunGaurav Expenses
A.	**Account-Gujarati Digambar Jain Samaj Mahasangh**					
I	M/s Ruloans Distribution Services Pvt. Ltd., Andheri, Mr. Kaushik Ashokkumar S. Mehta, Dadar-Goregaon (Received in FY 2025-26 amount of Rs.21,00,000/-)	21,49,410	17,17,410	2,80,000	1,00,000	52,000
III	Integreon Managed Solution Pvt. Ltd., Mumbai, (Received in FY 2025-26 amount of Rs.3,50,000/-)	3,55,000	1,35,000	2,20,000	–	–
IV	Shah Foils Pvt. Ltd., Gandhinagar, Gujarat. (Received in FY 2025-26 amount of Rs.1,00,000/-)	1,00,000	–	–	1,00,000	–
V	Tipsons Financial Services Pvt. Ltd., Ahemdabad (Received in FY 2025-26 amount of Rs.2,00,000/-)	2,00,000		-	2,00,000	–
VI	Jasubhai Media Pvt Ltd., (Received in FY 2025-26 amount of Rs. 2,00,000/-)	2,00,000			2,00,000	
VI	Others Receipts for Natural calamities	3,20,688	–	–	3,20,688	
B	**Account - Shree Jain Yuva Sangh, Mumbai**					
I	M/s Ruloans Distribution Services Pvt. Ltd., Andheri, Mr. Kaushik Ashokkumar S. Mehta, Dadar-Goregaon (Received in FY 2025-26 amount of Rs.19,00,000/-)	19,24,204	7,25,000	8,00,000	-	3,99,204
II	Tipsons Financial Services Pvt. Ltd., Ahemdabad (Received in FY 2025-26 amount of Rs.6,22,000/-)	6,35,000	35,000	6,00,000	–	–
III	MoneyCrew Fintech Pvt. Ltd., Mumbai (Received in FY 2024-25 amount of Rs.1,45,000/-)	1,50,000	1,50,000	–	–	–
IV	Shri C M Shah Scholarship Fund (Rs.375000/-) & Vidyashree Fund Scholarship	9,91,840	9,91,840	–	–	–
V	From Institute (Sanstha) Fund	2,09,881	–	–	–	2,09,881
C.	**Account - Vasant C & Prabha V Mehta Scholarship Charitable Trust**	5,06,000	5,06,000	–	–	–
D.	**Account - K. T. Education Charitable Trust**	1,70,703				1,70,703
	Total Spent for Several Activities	**79,21,726**	**42,60,250**	**19,00,000**	**9,20,688**	**8,31,788**
E.	Smt. Ami Nrupesh Chandrayadan Scholarship Fund Ahmedabad (Uttar Gujarat Zone)	7,50,000	7,50,000			

Note : No Medical Fund with our Institute, so whatever spent above are from CSR Fund Only.

• માતુશ્રી લલિતાબેન સેવંતીલાલ (વાસણા ચૌધરી) આપદા ફંડ થકી રૂા.૧૧,૫૬,૬૮૮/- કપિલાપુરી ફ્લડ રીલીફ માટે ખર્ચ કરેલ છે.

हाइकु

By પ.પૂ.આચાર્ય વિદ્યાસાગરજી મ.



'हाईकु' ते शुं छे ?

ત્રણ લાઈનમાં બનાવવામાં આવતું તે કાવ્ય છે. શાયરી, મુક્તક વિ. બે-ત્રણ લાઈનમાં જ બનતી હોય છે અને તે અર્થસભર હોય છે તેનું વિશ્લેષણ કેટલાંક પાનામાં (pages) માં થાય તે કરનાર પ્રબુધ્ધ કે વિદ્વાન વ્યક્તિના ઉપર નિર્ભર છે.

'हाईकु' नी निश्चित खासीयत शुं छे ?

'હાઈકુ' માં નિયમથી પ્રથમ પંક્તિમાં (લાઈનમાં) '૫ (પાંચ)' અક્ષર (letters) હોય છે. બીજી પંક્તિમાં '૭ (સાત)' અક્ષર હોય છે અને ત્રીજી પંક્તિમાં '૫ (પાંચ)' અક્ષર હોય છે.

આ પંક્તિમાં ગૂઢાર્થ હોય છે તે ગૂઢાર્થ અત્રે ઘણા સંક્ષિપ્તમાં સમજાવવામાં આવેલ છે. આ 'હાઈકુ' પૂ.આચાર્ય ની રચના છે તેથી ધર્મનો ગૂઢાર્થ તેમાં ભરેલો છે. પૂ.આચાર્યશ્રી જ્ઞાન અને ચારિત્ર બન્નેમાં સમાજમાં (ખાસ કરી M.P.માં) બદલાવ લાવવા મહદ્ અંશે ફાળો આપેલ છે. તેમને ક્રાંતિકારી અનેક રચનાઓ કરેલ છે જેમાં 'મૂકમાટી' મુખ્ય છે.

१५.

पूर्ण यथ लौं,
पाप की पीठ दे दौं,
वृत्ति सुखी हौं ।

भावार्थ - आचार्य महाराज सुखी होने का सहज उपाय बताते हुए कहते हैं कि संसारी प्राणियों के हिंसा आदि पाँच पापों का त्याग करके सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र रूप रत्नत्रय अर्थात् मोक्ष के मार्ग का अवलम्बन लो, तभी शाश्वत सुख प्राप्त कर सकोगे।

१६.

भूख मिटी हैं,
बहुत भूख लगी,
पर्याप्त रहे ।

भावार्थ - भूख लगना उत्तम स्वास्थ्य की निशानी है यदि अत्यधिक भूख लगी है तो इसका मतलब यह नहीं है कि भरपूर मात्रा में खा लिया जाये। जितना भोजन करने से भूख मिट जाती है उतना खाना ही पर्याप्त है। ज्यादा खाना अस्वस्थता को निमंत्रण देना है।

१७.

टिमटिमाते,
दीपक की भी देख,
रात भा जाती ।

भावार्थ - जिसप्रकार सघन अंधकारमय पूर्ण रात्रि किसी को भी सुहावनी नहीं लगती। कई व्यक्ति तो अंधकार देखकर भयभीत भी हो जाते हैं, पर उन्हें दिन के प्रकाश में किसी प्रकार का भय नहीं लगता है। यद्यपि रात्रि काल में सूर्य तो नहीं उगाया जा सकता है तथापि उस व्यक्ति को छोटे से दीपक का प्रकाश भी भय मुक्त कर देता है। उसीप्रकार भटकते हुये व्यक्ति को थोड़ासा ज्ञान, भयभीत व्यक्ति को थोड़ीसी हिम्मत और दु:खी, दरिद्र, रोगी, गिरते हुये व्यक्ति को थोड़ा-सा भी सहयोग मिल जाये तो वह परिस्थिति से मुक्त होकर निश्चित हो जाता है। इसका दूसरा अर्थ यह भी निकलता है कि इस काल में केवलज्ञानी रूप सूर्य का अभाव है पर सम्यग्ज्ञानी गुरुदेव रूपी दीपक के सद्भाव में जीवन आनन्दित हो जाता है।

क्रमश:.... आवता अंके....



દિગમ્બરાચાર્ય વિશુદ્ધસાગરજી રચિત

विचार

By પ.પૂ.આચાર્ય વિશુદ્ધસાગર મહારાજ

તંત્રી નોંધ : વર્તમાનમાં પૂ. આચાર્ય વિશુદ્ધ સાગર મ.સા., તેમના તરફથી જે 'વિચાર' ઉપર પ્રવચન કરવામાં આવ્યા તેનું સંકલન મુનિશ્રી સૌમ્યસાગરજી એ કરેલ છે. વાંચકના હિતાર્થે પ્રકાશિત કરી રહ્યા છીએ. હાલ તેમનું ચાતુર્માસ 'દિલ્હી' ખાતે છે.

२६. सम्यक् रूप से जानना, व्याख्यान करना, विचार करना ही प्रयोजनभूत

वस्तु को जानना, वस्तु का व्याख्यान करना, वस्तु-तत्त्व पर विचार करना - यह सब सामान्य अवस्था है। वस्तु को जानने वाले, व्याख्यान करने वाले तथा विचार करने वाले बहुत हैं। वे सब कोई विशिष्ट प्रयोजन-भूत नहीं हैं। विशेष प्रयोजन तो तब सिद्ध होता है जब वे वस्तु को सम्यक्-भूत जानें, सम्यक् ही उपदेश करें तथा समीचीन विचार करें। केवल जानना, बोलना, विचारना महत्त्वपूर्ण नहीं है। इन सब क्रियाओं में सम्यक् शब्द जुड़ा हो तो श्रेष्ठ है; सम्यक् शब्द से विहीन तो सब व्यर्थ है।

२७. सम्यक् विचार सर्व संसार में प्रवाहीमान हो जाते हैं

विचारधारा की विराटता व्यक्ति को विश्व में पहुँचा देती है। नदी का प्रवाह वर्द्धमान हो तो वह नाना देशों, राज्यों, प्रान्तों, नगरों में बहती-बहती सागर में प्रवेश कर जाती है। उसी प्रकार प्रकृष्ट विचारशील के प्रकट सम्यक् विचार सर्व संसार में पर्वतवत् प्रवाहीमान हो जाते हैं। जैसे पर्वत से गिरती पानी की धारा नदी से सागर तक पहुँचती है, परन्तु पर्वत अचल, स्थिर, तद्स्थान पर ही रहता है। वह नदी ही है जो पर्वत का नाम सर्वत्र भेज देती है। उसी प्रकार साधक, उत्कृष्ट-विचारक एक स्थान पर, एक देश में स्थित रहता है, परन्तु उसकी सम्यक् विचार-सरिता उसे सात सागर पार करा देती है; कालजयी बना देती है। विचारधारा विचार-शक्तिमान को सर्वत्र महान् बना देती है। प्रत्येक विचारशील को जीवित विचार करना चाहिए तथा मृतक विचारों से सदा आत्मरक्षा करनी चाहिए। धर्म, यश, चारित्र की वृद्धि हो, संक्लेशता की हानि हो, विश्व में प्रेम, वात्सल्य, मैत्रीभाव वर्द्धमान हो, परस्पर में मानवता की वृद्धि हो, दानवता का विनाश हो, घर-घर में जिनागम, जिन-गुरुओं, जिनदेव की चर्चा हो, धर्म तथा वात्सल्य-भाव सदा जयवन्त रहे। कालुष्य-भाव का पूर्ण अभाव हो; जिनदेव, जिनवाणी, निर्ग्रन्थ साधु भगवन्तों के प्रति सदा अनुराग रहे।

२८. सम्यक विचार के अभाव से देशव्यापी अनाचार

सामाजिक विचारधार में समाज का दर्शन होता है फिर व्यक्ति को अन्य कार्य दृष्टिगोचर नहीं होता। समाज के विकास, विनाश, उत्पत्ति पर विचार चलता है। एक श्रेष्ठ समाज की रचना हो, पर इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सुख-भोग भावना मात्र से श्रेष्ठ समाज की रचना असम्भव है। कारण, मात्र भौतिक इन्द्रिय सुख-सामग्री के संचय पर लक्ष्य रहा तो फिर व्यक्ति अन्य के सुख के बारे में कुछ विचार नहीं कर पायेगा। उसके अन्दर सम्यक् विचार का अभाव ही दिखेगा, जिसके परिणाम-स्वरूप देशव्यापी अनाचार फैल जाएगा। पशुवृत्ति मानव के अन्दर प्रवेश कर जायेगी। इसीलिए श्रेष्ठ समाज का निर्माण धर्म-भावना सापेक्ष ही किया जा सकता है, धर्म-भावना निरपेक्ष नहीं।

२९. सम्यक् विचारशील के पास ही कार्य करने की क्षमता

कुशल विचारक अपना सोच विशालता-युक्त बनाता है। न्यून सोच-युक्त विचारक विश्व-हित का विचार नहीं कर पाते। स्व-परिवार, स्व-ग्राम, स्व-शरीर, स्व-राज्य, स्व-राष्ट्र के हित-चिन्तक सीमित विचार वाले हैं। असीमित सोच वाला व्यक्ति सम्पूर्ण वसुन्धरा पर विचरण करने वाले जीवों के हित-चिन्तक होते हैं। सर्व-हित, सर्व-काल, सर्व-सुख का नारा सर्व-लोकव्यापी सम्यक् विचारशील नरोत्तम के पास ही शोभायमान होता है। संकुचित विचारधारा में जीने वाला व्यक्ति क्या जगत्-हित कर पायेगो? स्व-बुद्धि को ही श्रेष्ठ न मानकर सर्वप्रथम सर्व जीवों की योग्यता का भी विचार करना चाहिए। कार्य करने की योग्यता के साथ, कार्य कराने की भी योग्यता होनी चाहिए। कार्य क्षमता से भी बड़ी कार्य कराने की क्षमता होती है। कोई भी व्यक्ति एक-दो कार्य कर पाता है, कार्य तो लाखों-करोड़ों से करवाया जाता है। लाखों लोगों से कार्य कराने के लिए लाखों से अधिक बुद्धि की आवश्यकता पड़ेगी। पर की बुद्धि को दबाकर कैसे रख सकते है? गुरुता, प्रभुत्व शक्ति-सम्पन्न सभी का प्रसन्न कैसे रख सकते है? कार्य पूर्ण चोखा हो, परन्तु स्वयं दूर रहें। स्व को सामान्य तथा विशेष सभी मानें। आप विशेष होते हुए भी सभी में सामान्य रहें। यही नियंत्रण कर्ता का विशेष गुण है।

क्रमशः.... अंगले अंक में

ADV

લોકાધાર હિતચિંતક બનતા
વડોદરા ડિવિઝનના ભૂતપૂર્વ પ્રમુખશ્રી
શાહ રજનીકાન્ત ડાહ્યાલાલનું જીવન ઝરમર



શ્રી.રજનીકાન્ત-શ્રીમતી અરૂણાબેન
પૌત્રી સલોની અને પૌત્રવધૂ દિયા અને પૌત્ર થાલીન (USA)



શ્રી.રજનીકાન્ત ડાહ્યાલાલ શાહ

શ્રી જૈન યુવા સંઘની સ્થાપના વડોદરા ખાતે થઈ ત્યારે **સ્થાપક ઉપપ્રમુખ** તરીકેનું સ્થાન ભોગવનાર શાહ રજનીકાન્ત ડાહ્યાલાલ 'સંઘ' સાથે તે અગાઉ સંકળાયેલ હતાં. જેમનું મૂળવતન-જન્મસ્થળ પાટનાકુવા (જન્મતારીખ : ૧૪-૧૦-૧૯૪૫) અને વડોદરામાં સ્થાયી થયા, પરિવાર સમૃધ્ધ બન્યો આમ કર્મભૂમી વડોદરા તેમને ઘણું-ઘણું આપ્યું.... ચૈતન્યધામ (N.H.-8) ના કારોબારી સભ્ય ઉપરાંત વડોદરા ખાતે શ્રી.દિગંબર જૈન મુમુક્ષુ મંડળના સ્થાપક, શ્રી આદિનાથ દિગંબર જૈન મંદિર-વડોદરા (ઘંટીયાળા મંદિર) ના પાયા સ્થાપના કાળથી સદસ્ય રહી પંચકલ્યાણક પ્રતિષ્ઠા માં સહભાગી બનનાર, મુમુક્ષુ સમાજના અધ્યક્ષ - સ્થાપક ટ્રસ્ટી તરીકે સક્રિયપાણે યોગદાન આપેલ છે **શ્રી જૈન યુવા સંઘ વડોદરા ના કાળકમે 'પ્રમુખ' રહ્યા....** સાથે-સાથે ધંધાકિય ક્ષેત્રે **સફળ બીજનેસમેન** હોવાની સાથે 'વડોદરા ગ્રેઈન મર્ચંટ એસોસીએશન ના **પ્રમુખ** તરીકે સેવા માં હતાં ત્યારે વડોદરા નજીક દોગા ગામે આધુનિક કતલખાનું કરવામાં આવનાર હતું તે સમયે વિરોધમાં અગ્રેસર રહ્યા અને **'સર્વજીવદયા સમિતી'** ના **ઉપપ્રમુખ** તરીકે સેવાઓ આપી.... આમ **યુવા અને પ્રૌઢ અવસ્થા** વિવિધ સામાજીક-ધાર્મિક-જીવદયા ના કાર્યોથી દિપાવનાર શ્રી.રજનીભાઈ પાટનાકૂવા ની શાળામાં સાત ધોરણ પાસ કરી વધુ અભ્યાસ અર્થે પ્રાંતિજ ખાતે દિગંબર જૈન બોર્ડિંગમાં રહ્યા બાદ કોલેજનો અભ્યાસકમ તલોદ અને અમદાવાદ (કે.જે.છાત્રાલયમાં) રહીને કરીને B.Sc. ગ્રેજ્યુએટ થયેલ....

તેમના લગ્ન (તા.૩૦-૦૪-૧૯૬૬) લાકરોડા નિવાસી કોટડીયા અમરતલાલ ચુનીલાલ ની સુપુત્રી **'અરૂણાબેન'** સાથે થયા હતા અને તેમના સંસારની આંગણવાડીમાં ત્રાણ સંતાનો રમતાં થયાં જેમા મોટા પુત્ર હર્ષદભાઈ, સમીરભાઈ અને લાડકી દિકરી કુંજ નું અવતરણ થયું.... ભાઈશ્રી સમીર કિશોરાવસ્થામાં જ **રોડ એક્સીડેન્ટ માં** આ ફાની દુનિયામાંથી તા.૨૬-૧૧-૧૯૯૬ ના વિદાય લીધેલ. તે વરવા 'ઘા' ને માત-પિતા એ પ્રૌઢ અવસ્થામાં જીલવો પડ્યો... આ સિવાય સુખમય જીવન યાત્રાના સંધ્યાના પડાવમાં રજનીભાઈ-અરૂણાબેન નું **અમર જોડું** ધર્મમય જીવન વડોદરામાં વિતાવી રહેલ છે.

તેઓશ્રી ને 'લોકાધાર સમાજ હિતચિંતક' બનવા બદલ ધન્યવાદ સાથે હાર્દિક અભિનંદન....

હાર્દિક અભિનંદન



બૃહદ મુંબઇ ગુજરાતી સમાજ ના પ્રમુખ તરીકે વરણી પામેલ આપણા

મહાસંઘના ચાન્સેલર શ્રી. રાજેશ દોશી

'બૃહદ મુંબઈ ગુજરાતી સમાજ' મુંબઈ માં વસતા ગુજરાતીઓની ૪૧ વર્ષ જુની સંસ્થાએ તેમાં ૧૦૫ જુદી જુદી સંસ્થા અને જ્ઞાની મંડળો સંસ્થાકીય સભ્ય તરીકે જોડાયેલ છે. ઉપરાંત આજીવન સભ્યો અને પેટર્ન સભ્યો છે. સંસ્થા ગુજરાતી ભાષીઓ માટે વિવિધ કાર્યો સતત કરતી રહેલ છે. સરકારો સાથે સંકલન કરી ગુજરાતી સમાજના હીતો માટે સતત કાર્યશીલ છે.

'બૃહદ મુંબઈ ગુજરાતી સમાજ'નું પોતાની માલિકીનું 'નવનીત ગુજરાત ભવન' મુંબઈ ના અંધેરી ખાતે, લીંક રોડ ઉપર, ગ્રાઉન્ડ + ૭ માળનું સ્વતંત્ર બિલ્ડીંગ છે. જેમાં ૨ હોલ, રહેવાની રૂમો, હાયટેક લાયબ્રેરી, રેસ્ટોરન્ટ, ટુંક સમયમાં હેલ્થ સેંટર ચાલુ થઈ જશે.

આમાં NRI તથા બહારગામથી આવતા વેપારીઓ તથા પરીવાર રહેવાનો લાભ લઈ રહેલ છે. આ પ્રોપર્ટીની આજની માર્કેટ વેલ્યુ રૂા.૧૨૫ કરોડથી વધારે છે.

આપણા રાજેશ દોશી શરૂઆતથી જ મહામંત્રી તરીકે લગભગ ૪૦ વર્ષ થી સેવાઓ આપી રહેલ છે અને તાજેતરમાં જ તેમની સર્વાનુમતે પ્રમુખ તરીકે વરણી થયેલ છે.

ખૂબ ખૂબ અભિનંદન અને એમના યશસ્વી કારકિર્દીબદલ શુભેચ્છા.

❖ શુભેચ્છક ❖

ગુજરાતી દિગંબર જૈન સમાજ મહાસંઘના સાંસદો / લોકપ્રતિનિધિઓ / કારોબારી સભ્યો



જન્મદિવસની શુભકામનાંઓ



ધ્રુવ અનિલ શાહ

જન્મ તારીખ : ૪-૯-૨૦૦૩



કમ્પ્યુટર સાયન્સમાં બી.ટેક. (B.Tech.) ની પદવી સફળતાપૂર્વક પ્રાપ્ત કરી, હાલ માં ઓસ્ટ્રેલિયાના મેલબોર્ન શહેરમાં આર્ટિફિશિયલ ઇન્ટેલિજન્સ (AI) વિષયમાં માસ્ટર્સનો અભ્યાસ કરી રહ્યો છે.



કુમાર ધ્રુવના જન્મદિવસની ખુશાલીમાં
લોકાધારને ₹2100/- આપ્યા બદલ
ખુબ ખુબ આભાર.

ભાવભીની શ્રદ્ધાંજલી



જન્મ : ૦૮/૦૫/૧૯૪૦

ગામ : મહાદેવપુરા

દેહવિલય : ૩૦/૦૯/૨૦૨૫

હાલ : મુંબઇ

સ્વ. શ્રી. બાબુલાલ સોમચંદ શાહ

પરિવાર જેનું મંદિર હતું, સ્નેહ જેની શક્તિ હતી, પરિશ્રમ જેનું કર્તવ્ય હતું,
પરમાર્થ જેની ભક્તિ હતી. ધર્મ કદી ભૂલ્યા નહીં, વ્યવહાર કદી ચૂક્યા નહીં,
સમાજ સેવા માટે સદૈવ તત્પર રહ્યા,
પરિવાર માટે ફૂલો પાથરી ગયા, એવા દિવ્ય આત્માને
પ્રભુ પરમ શાંતિ આપે એ જ પ્રાર્થના

આપના સદાય ઋણી સ્વજનો

ધર્મપત્ની : વર્ષાબેન બાબુલાલ શાહ
પુત્ર : હિતેષભાઇ, મિતેશભાઇ, પુત્રી : નીલાબેન, રુપાબેન
પુત્રવધૂ : સંગીતાબેન, મીનાબેન,
જમાઇ : બિપીનકુમાર, રાકેશકુમાર
પૌત્ર-પૌત્રવધૂ : કૃણાલ-સ્મૃતિ, અક્ષિત-લીસા, મનય,
પૌત્રી : સૃષ્ટિ - શ્રેયસકુમાર, માનશી
દોહિત્રી : શાયવી, પાર્શવી, ઈશ્વા

બીજી પુણ્યતિથીએ

ભાવભીની શ્રદ્ધાંજલી

સંઘ-મહાસંઘના સ્થાપક



જન્મ : ૧/૪/૧૯૪૪

અરિહંત શરણ : ૧૮/૯/૨૦૨૪

તમારા મધુર સ્મરણો અંકિત છે
અમારા હૃદયમાં,
તમારા કર્મોની સુવાસ જીવંત છે
અમારા શ્વાસોમાં,
સદેહ તમે નથી એ સચ્ચાઇ છે,
પણ
અસ્તિત્વમાં તમે છો
અને
હંમેશા રહેશો એ વિશ્વાસ છે

આપના સદાય ઋણી સ્વજનો

ધર્મપત્ની : કૈલાસબેન વિનોદચંદ્ર ગાંધી
પુત્ર : અમીતભાઇ, અલ્પેશભાઇ, ભાવેશભાઇ
તથા સમસ્ત ગાંધી પરીવાર

ખાનદાનીના આવા અનુભવ આજે પણ થાય છે

'નખમાં ય રોગ નહોતો, બે ટાઈમ જમવાનું ને બે ટાઈમ ચા સિવાય બીજું કોઈ વ્યસન નહીં...' જ્યાબહેન ધીમા અવાજે જાણકારી આપી રહ્યા હતા... તોય કોણ જાણે ક્યાંથી આ ઉપાધિ ઓવી ગઈ!'

હોસ્પિટલના સ્પેશિયલ રૂમમાં એરકન્ડિશનની આછી ઘરઘરાટી સિવાય બીજો કોઈ અવાજ નહોતો. જ્યાબહેનના પતિ રતિલાલ પલંગ પર સૂતા હતા અને એમની આસપાસ જાતજાતનાં તબીબી ઉપકરણો ગોઠવાયેલાં હતાં. ત્રેસઠ વર્ષના રતિલાલની આંખો બંધ હતી.

'પહેલા ક્યારેય એમને હાર્ટમાં આવી તકલીફ થયેલી?' જ્યાબહેનના જૂના પાડોશી સવિતાબહેને સામે જોયું અને પછી જ્યાબહેનને પૂછ્યું.

'મેં તમને કહ્યું ને? કોઈ દાંડો તાવ કે શરદી યે નથી થઈ. માથું દુઃખે તો બામ લગાડે, પાણ દવાની ગોળી ના ખાય. એમને એટેક આવ્યો ત્યારે બધા ફ્લેટવાળાને નવાઈ લાગેલી કે રતુભાઈ જેવા માણસને હાર્ટએટેક કઈ રીતે આવ્યો?'



સહેજ અટકીને જ્યાબહેને આગળ કહ્યું, 'રવિવારે સાંજે ચાર વાગ્યે મેં એમને ચા આપી ત્યારે એમાણે કહ્યું કે ગેસની તકલીફ થઈ છે. આટલું કહીને એમાણે અજમો લઈને એમાં જરાક મીઠું નાખીને ચાવી ગયા. એ પછી રાત્રે મેં જમવા બોલાવ્યા ત્યારે કહે કે હજુ ગેસની તકલીફ છે એટલે મારે વાળુ નથી કરવું. મેં જોયું તો એમનું મોઢું ઊતરી ગયેલું અને છાતી ઉપર હાથ દબાવીને ઢીલા થઈને બેઠા હતા. મને ઘ્રાસ્કો પડ્યો એટલે મેં બાજુમાં રહેતા બાબુભાઈને બોલાવ્યા. બાબુભાઈએ તો એમને જોઈને તરત કહ્યું કે હાર્ટના મામલાને હળવાશમાં ના લેવાય. જરાયે ઢીલ કર્યા વગર એકસો આઠને ફોન કરીને સીધા હોસ્પિટલ પહોંચી જવું પડે! મેં હા પાડી એટલે એમાણે એકસો આઠને ફોન કર્યો અને મેં મારા ભાઈઓને અને દીકરી-જમાઈને ફોન કર્યો.'

એક સાથે આટલું બોલીને એ સહેજ અટક્યા એટલે સવિતાબહેને પૂછ્યું. 'તમારી દીકરી-સંગીતા તો નારાણપુરામાં જ રહે છે ને? જમાઈ સુરેશકુમારનો પ્રિન્ટિંગનો જ બિઝનેસ છે ને? વચ્ચે મારા પિન્ટુને કંઈક છપાવવાનું હતું ત્યારે એ સુરેશકુમારને ત્યાં જ ગયો હતો. ઓળખાણ કાઢી એટલે ખાસ્સું ડિસ્કાઉન્ટ આપેલું.'

જમાઈ સુરેશકુમારના ઉલ્લેખથી જ્યાબહેનના ચહેરા પર અણગમો પથરાયો. વાત બદલીને એમાણે કહ્યું, 'સંગીતા તો છેક બોપલ રહેવા ગઈ છે. એ લોકો આવે એ પહેલા મારા બંને ભાઈઓ હોસ્પિટલમાં પહોંચી ગયા હતા. ડૉક્ટરોએ જાતજાતના ટેસ્ટ ફટાફટ કરીને કહી દીધું કે હાર્ટમાં બ્લોકેજ છે અને હાર્ટએટેક ચાલુ છે. ઓપરેશન કરીને સ્ટેન્ટ મૂકવા પડશે. આવી દશામાં આપાણે તો હા પાડવા સિવાય બીજું શું કરી શકીએ? મારા ભાઈઓએ એ જ વખતે હોસ્પિટલમાં સાડા ચાર લાખ રૂપિયા જમા કરાવી દીધા અને તરત સારવાર શરૂ થઈ ગઈ...'

જ્યાબહેનના અવાજમાં હળવાશ ભળી. 'ભગવાનની દયાથી જોખમ ટળી ગયું છે. ડૉક્ટરોએ કહી દીધું છે કે હવે ચિંતાની કોઈ વાત નથી. પરમ દિવસે તો કદાચ રજા પાણ આપી દેશે.'

થોડી વાર પછી સવિતાબહેને રજા લીધી. જ્યાબહેને ઊભા થઈને ઊંઘતા પતિના મસ્તક ઉપર હાથ ફેરવ્યો અને પાછા આવીને સોફામાં આડા પડ્યા.

સંગીતા ટિફીન લઈને આવી. જ્યાબહેનની પાસે બેસીને એણે ટિફીન ખોલ્યું. ટેબલના ડ્રોઅરમાંથી પ્લેટ કાઢીને બધી વાનગીઓ એમાં મૂકી. જ્યાબહેને ચૂપચાપ જમી લીધું. ત્યાં સુધી એ દીકરી સાથે એક શબ્દ પાણ બોલ્યા નહીં અને દીકરીએ પાણ જનેતાની સાથે કોઈ વાત ના કરી!

'આ વધેલા રોટલી-શાક મૂકતી જા, એટલે સાંજે તારે ધક્કો નહીં...' સંગીતાએ જવાની તૈયારી કરી ત્યારે જ્યાબહેને આટલું કહ્યું.

'કાલે બાર વાગ્યે આવી જઈશ. તારે બીજું કંઈ મંગાવવું હોય તો કહે, લેતી આવીશ.' જ્યાબહેનની સામે જોઈને સંગીતાએ કહ્યું.

'એ તો હજુ ટૂરમાં જ છે ને?...' જ્યાબહેનના અવાજમાં કડવાશની સાથે હડહડતો ધિક્કાર છલકાતો હતો. 'અહીં સસરો મરવા પડ્યો છે અને એ સાહેબને સહેજેય પરવા નથી! નખમાં ય રોગ નહોતો એવા માણસને જમ જેવા જમાઈના પાપે એટેક આવી ગયો! પૈસા પાછા આપવાની વાત તો બાજુએ રહી, ટૂર ટૂંકાવીને ખબર કાઢવા આવવાનું પાણ એને ભાન નથી!'

એમને કશો જવાબ આપ્યા વગર સંગીતાએ ખાલી ટિફીન હાથમાં લીધું અને પલંગમાં સૂતેલા પિતા સામે નજર કરી. અત્યારે રતિભાઈ ઘેનની અસરમાંથી મુક્ત થઈ ગયા હતા. સંગીતાએ એમની સામે જોયું એટલે એ પાણ દયામણી નજરે દીકરી સામે તાકી રહ્યા. ધીમા પગલે સંગીતા ઓરડામાંથી બહાર નીકળી ગઈ.

રતિભાઈએ ફરીથી આંખો બંધ કરી દીધી. હવે પાંચ વાગ્યા સુધી કોઈ આવવાનું નહોતું એટલે આરામ કરવા માટે જયાબહેન પાણ સોફામાં આડા પડ્યા.

જયાબહેનની નાની બહેન સુધા મુંબઈ રહેતી હતી. એ પાણ ખબર કાઢવા માટે આજે અમદાવાદ આવી હતી. સાંજે પાંચ વાગ્યે બંને ભાઈઓની સાથે એ હોસ્પિટલમાં આવી અને જયાબહેનને વળગીને થોડી વાર રડી. પછી ભાઈઓએ એને સમજાવ્યું કે હવે રડવાની જરૂર નથી. ડૉક્ટરે કીધું કે જયાબહેનનો ચૂડી-ચાંદલો હવે પચીસેક વર્ષસુધી અખંડ રહેવાનો છે.

અત્યારે રતિભાઈ જાગ્રત અવસ્થામાં હતા. 'આ મારી બેન છેક મુંબઈથી તમારી ખબર પૂછવા આવી છે....' રતિભાઈની સામે જોઈને જયાબહેને બળાપો કાઢ્યો. 'આ મારા ભાઈઓ બધા કામ પડતા મૂકીને દોડાદોડી કરે છે, હોસ્પિટલના સાડા ચાર લાખ રૂપિયા પાણ એમાણે રોકડા ભરી દીધેલા એ તો તમને ખબર છે ને?'

એ પછી સહેજ અટકીને જયાબહેને સુધા સામે જોઈને આક્રોશ ઠાલવ્યો 'સુધા, એકની એક દીકરીને પરણાવી ત્યારે એવી આશા હતી કે જમાઈ સગા દીકરાની જેમ અમારી સંભાળ રાખશે, પાણ આ જમાઈ તો અમારો જીવ લેવા બેઠો છે. એના પાપે જ આમને એટેક આવી ગયો છે ! અમારા ફ્લેટમાં એકસ્ટેન્શનની વાત લગભગ ફાઈનલ હતી. અમારા સિવાય બાકીના અગિયારે અગિયાર સભ્યોએ પાંચ પાંચ લાખ રૂપિયા જમા કરાવી દીધા હતા. સુધા, અમારી દશા તો તારાથી અજાણી ક્યાં છે?'

ભૂતકાળ યાદ કરી ને જયાબહેને આગળ કહ્યું, 'તારા બનેવીને સાંઈઠ વર્ષની ઉંમરે એમાણે સંગીતા માટે આ હીરો શોધી કાઢ્યો ! એકની એક દીકરી એટલે એના લગ્ન માટે એમાણે બધું પ્રોવિડન્ડ ફંડ ઉપાડી લીધું. એ સિવાય બીજી કોઈ બચત તો હતી નહીં. રંગેચંગે ધામધૂમથી લગ્ન પતાવીને અમે રાજી થયેલા. એક વર્ષ પછી સંગીતા અને સુરેશકુમાર અમારે ત્યાં આવ્યા. ધંધાના વિકાસ માટે અમુક મશીન ખરીદવા છે એમ કહીને એમાણે પાંચ લાખ રૂપિયા ઉછીના માગ્યા. સંગીતાએ કહ્યું કે આ રકમ અમે બે વર્ષમાં પાછી આપી દઈશું. દિકરી અને જમાઈ માગવા આવે તો ના કઈ રીતે પડાય? તારા બનેવીએ એમના સ્ટાફની કેડિટ સોસાયટીમાંથી લોન લઈને એમને પાંચ લાખ રૂપિયા આપી દીધા...'

જયાબહેનના અવાજમાં હડહડતો ધિક્કાર ઉમેરાયો. 'એ પછી તો પાંચ વરસ થઈ ગયાં, પાણ એ રાક્ષસે એક રૂપિયો ય પાછો નથી આપ્યો ! ફ્લેટમાં પાંચ લાખ આપવાના હતા એટલે સંગીતાને મેં ફોન કરીને ચારવાર યાદ કરાવ્યું. પાણ પેલો પૈસા ના આપે તો બાપડી સંગીતા શું કરે? ફ્લેટવાળા બધા સભ્યો ઉઘરાણી માટે એક સાથે અમારા ઘેર આવ્યા અને કહે કે રતુકાકા, એક તમારા માટે થઈને જ ફ્લેટનું કામ અટક્યું છે. વહેલી તકે પાંચ લાખ આપો એટલે એકસ્ટેન્શનનું કામ શરૂ થાય... એ ઉચાટમાં જ તારા બનેવીની તબિયત લથડી. સંગીતાના લગ્ન વખતે રિટાયરમેન્ટ વખતે મળનારી રકમ ઉપાડી લીધેલી, ભાઈબંધો પાસેથી પાણ ઉછીના લીધેલા. એ પછી એક વર્ષ પછી લોન લઈને એ બદમાશને પાંચ લાખ બાળેલાં-એટલે રિટાયર થયા પછી હાથમાં ખાસ કંઈ આવ્યું નહોતું. અત્યારે એમની કો-ઓપરેટિવ બેન્ક જે પેન્શન આપે છે એ એકમાત્ર આધાર છે. એ રકમમાં માંડ પૂરું થાય છે. સોસાયટીવાળા પાંચ લાખ માટે ઉઘરાણી કરતા હતા અને અમારે તો એ માટે જમાઈ પૈસા પાછા આપે એ એકજ આધાર હતો.

એ ટેન્શનમાં ને ટેન્શનમાં સાંજે જ એમને એટેક આવી ગયો. આપાણા ભાઈઓ એટલા સારા કે એમાણે હોસ્પિટલમાં આવીને પૈસા ભરી દીધા. પેલા પાંચ લાખની ઉપાધિ હતી એમાં આ ખર્ચો ઉમેરાયો. તોય જમાઈ જલસા કરે છે ને દીકરી બિચારી મનમાં ને મનમાં શોષવાય છે.'

જયાબહેન આક્રોશથી બોલતા હતા. સુધા અને બંને ભાઈઓ ચૂપચાપ સાંભળતા હતા.

પલંગમાં રતિભાઈ જાગ્રત હતા. પાણ આંખો બંધ કરીને જયાબહેનનું જોરદાર ભાષાણ સાંભળી રહ્યા હતા.

'તમે ઘરના છો એટલે તમને સાચી વાત કહેવાય, બાકી બધાને તો સીધીસાદી એટેકની જ વાત કહેવી પડે છે. જમ જેવો જમાઈ સસરાનો જીવ લેવા બેઠો છે, એવું લોકોને થોડું કહેવાય?'

એ જ વખતે સંગીતા અને સુરેશ રૂમમાં પ્રવેશ્યાં. સુરેશને આવેલો જોઈને જયાબહેનની કમાન છટકી. વળી, અત્યારે તો એમના બે ભાઈઓ અને બહેન પાણ પડખે ઊભા હતા. એટલે અત્યાર સુધી ધરબી રાખેલો ગુસ્સો વિરાટ વિસ્ફોટ બનીને બહાર આવ્યો.

'સુરેશકુમાર ! શું મોઢું લઈને તમે સસરાની ખબર કાઢવા આવ્યો છો? સસરાને પાંચ લાખમાં ધૂતી લીધા પછી પાંચ વર્ષમાં એકેય રૂપિયો તમે પાછો આપ્યો નથી. ફ્લેટવાળાએ ઉઘરાણી કરી ત્યારે તમારા એકલા ઉપર આધાર હતો. સંગીતાને મેં ફોન કર્યો પણ તમે ફસકી ગયા, કોઈ જવાબ જ ના આપ્યો અને આ...'' પલંગમાં સૂતેલા રતિલાલ તરફ આંગળી ચીંધીને જયાબહેને તીણા અવાજે કહ્યું....' તમારા પાપે એમને એટેક આવી ગયો ! મારા ભાઈઓએ તાત્કાલિક પૈસા ના આપ્યા હોત તો મારો ચાંદલો ભૂંસાઈ જાત ! જવાબ આપો, સુરેશકુમાર ! પાંચ લાખ લીધા પછી તમને કંઈ શરમ જેવું છે કે નહીં? ઘરડાં સાસુ-સસરાને હેરાન કરવામાં તમને મજા આવે છે? સસરો ઉકલી ગયો હોય તોય તમને તો આનંદ જ થાત ને?'

'હવે તું મૂંગી મરીશ?' પલંગમાં અડધા બેઠા થઈને રતિભાઈએ એટલા મોટા અવાજે ત્રાડ પાડી કે રૂમમાં બધા સ્તબ્ધ થઈ ગયા.'

'જેમણે મારી નોકરી બચાવી અને જેલમાં જતો બચાવ્યો, એ જમાઈને તું આ રીતે ગાળો દે છે, એ મારાથી સહન નથી થતું...' રતિભાઈ ક્રૂજતા અવાજે બોલતા હતા. 'વાંક મારો છે, છતાં દોષનો ટોપલો માથે ઓઢીને એ ચૂપચાપ ઊભા રહીને તારો લવારો સાંભળે છે, એ એમની ખાનદાની છે. મેં એમને વચનથી બાંધી લીધેલા છે. એટલે એમણે તો સંગીતાને પણ વાત નથી કરી...'

સુધા, જયાબહેન અને બંને ભાઈઓ સ્તબ્ધ થઈને આશ્ચર્યથી રતિભાઈ સામે જોઈ રહ્યા હતા. સંગીતાએ 'સુરેશનો હાથ પોતાના હાથમાં જકડી રાખ્યો હતો.

'બીજો એટેક આવે અને ઉપર જાઉં ત્યારે પાપનો ભાર લઈને નથી જવું એટલે અત્યારે ખુલ્લા મનથી કબૂલાત કરવામાં મને જરાયે શરમ કે સંકોચ નથી !'

બધાની સામે જોઈને રતિભાઈએ કબૂલાત કરી, 'સંગીતાના લગ્ન વખતે જિંદગીમાં પહેલી વાર બેન્કમાં નાનકડો કકળો કરીને ચાર લાખ રૂપિયા ગૂપચાવી લીધેલા. રિટાયરમેન્ટમાં એક વર્ષ બાકી હતું ત્યારે અચાનક ઑડિટમાં એ ગફલો પકડાઈ ગયો. ઓડિટર અને મેનેજરે મને કેબિનમાં બોલાવીને કહ્યું કે આટલા વર્ષની નોકરીમાં તમારો રેકર્ડ એકદમ ચોખ્ખો છે, વળી દસ મહિના પછી તમે રિટાયર થવાના છો. એટલે જો કાયદેસરના પગલાં લઈએ તો તમે જેલમાં જશો અને નિવૃત્તિના કોઈ લાભ નહીં મળે. હું એમને કરગર્યો એટલે એમણે મારા પર મહેરબાની કરીને કહ્યું કે ચોવીસ કલાકમાં સાત લાખ રૂપિયા જમા કરાવી દો, તો બેન્ક તરફથી કોઈ એક્શન નહીં લેવાય...'

લગીર અટકીને એમણે બધાની સામે જોયું. 'એ મેનેજરે મને બચાવી લેવાનું વચન તો આપ્યું પણ તાત્કાલિક સાત લાખ લાવવા ક્યાંથી ? એ પણ આવા કારણથી ? સુરેશકુમાર પાસેથી પાંચ લાખ લેવાના હતા એટલે હું એમની પાસે ગયો અને નિખાલસતાથી બધી વાત કહી. એમણે દોડાદોડી કરીને આઠ કલાકમાં જ સાત લાખ રૂપિયા મારા હાથમાં આપી દીધા ! મેં એમને સોગન આપેલા કે આ વાત આપણા બે વચ્ચે જ રહેવી જોઈએ. એમણે વચન આપેલું કે કોઈને જાણ નહીં કરું, ઈવન સંગીતાને પણ નહીં કહું...'

સહેજ અટકીને રતિભાઈએ જયાબહેન સામે જોયું, 'તારી જીભ પણ જબરી છે ! જે માણસને પડકડવા જોઈએ, એને તું પ એમ બોલે છે. એ સાંભળ જેમ ફા શીરડી ફરતી હોય તેવું હૈયામાં દોષ મારો હતો અને લાગતું હતું આપી રહી હતી. એટલે એને હાલતમાં પણ કબૂલાત ના છૂટે કે હવે સાંભળ, આ આપણે કરવી પડી નથી, દેવદૂત છે ! સમજ જમાઈ જ

જયાબહેન નીચું જાણ પડી ? હતા. સુધા અને બંજાઈને ઊભા આદરભાવથી સુરેશ સામે ભાઈએ હતા. સંગીતાએ સુરેશને જોઈ રહ્યા જોરથી જકડી રાખ્યો હતો. હાથ

જોકે આજે આપણે જોઈએ છે કે બધે ગણતરીની બોલબાલા છે. તપ કે ધ્યાનની ગણતરી ચાલે તો એનું મૂળ ખોવાઈ જાય છે. ક્યારેક ગણતરી એ ગર્વનું સાધન બને છે. જ્યારે સાચી સાધના તો સ્નેહ જેવી છે, જ્યાં સતત સ્મરણ ચાલતું હોય, એક પળ પણ એનાથી ખાલી ન હોય.

કેટલાક લોકો કેટલીકવાર મંત્રનો જાપ કર્યો કે કેટલી વાર કથા સાંભળી એની ગણતરી કરતા હોય છે. ખરેખર તો એવી ગણતરી કરવાને બદલે એ વિચારવું જોઈએ કે આમાંથી કેટલું જીવનમાં ઉતાર્યું અને કેટલું ઉતારવાનું બાકી છે.

ગણતરી નહીં, પણ આત્મશોધન એ જ ધર્મપ્રવૃત્તિનો પાયો છે.

દેશ-વિદેશના મહાપુરૂષોને ઓળખો

તંત્રી નોંધ : દેશ-વિદેશ કે રાજ્યના મહાપુરૂષોના વિભાગમાં પ્રેરણા મળે તે હેતુથી જે-તે વ્યક્તિના વિવિધ ક્ષેત્રે આપેલ સેવા તથા ક્રાંતિકારી યોગદાન કરનાર મહાપુરૂષોના સંક્ષિપ્ત જીવની અને તેમના કાર્યો આપવામાં આવે છે.... તે કયા સંપ્રદાયના કે કયો ધર્મ પાળે છે કે પાળતા હતા તે જોવામાં આવતું નથી. કોઈપણ ક્ષેત્રે તેમને કેવું યોગદાન આપેલ છે તે જ જોવામાં આવે છે.



૧ મણિલાલ દ્વિવેદી

'કંઈ લાખો નિરાશામાં અમર આશા છુપાઈ છે' એ પ્રસિદ્ધ કાવ્ય રચનાર પંડિતયુગના સાહિત્યકાર મણિલાલ નભુભાઈ દ્વિવેદીનો જન્મ ઈ.૧૮૫૮ માં સાક્ષરભૂમિ નડિયાદમાં થયો હતો. મેટ્રિકની પરીક્ષામાં સંસ્કૃત વિષયમાં નાપાસ થયા પરંતુ બીજે વર્ષે સમગ્ર યુનિવર્સિટીમાં બીજા નંબરે પાસ થયા. તેમની નડિયાદની હાઈસ્કૂલમાં શિક્ષક તરીકે, ત્યાર પછી સરકારી કન્યાશાળાઓના નિરીક્ષક પદે નિમાયુક્ત થઈ હતી. તેઓ નારીની કેટલી પ્રતિષ્ઠા કરતા હતા તેનું પ્રમાણ 'નારી પ્રતિષ્ઠા' નામનો તેમનો ગ્રંથ જ કહી આપે છે. ધર્મચિંતક તરીકે શંકરાચાર્યનો અદ્વૈત સિદ્ધાંત તેમને વધુ આકર્ષી ગયો હતો. 'ષડદર્શન', 'ઉત્તમરામચરિત' જેવા ૧૭ સંસ્કૃત ગ્રંથોનું તેમણે અનુવાદ સહિત સંપાદન કરેલું છે. ઉપરાંત 'નૃસિંહાવતાર' અને 'કાન્તા' નાટકો અને 'આત્મ નિમજ્જન' કાવ્ય સંગ્રહ ઉલ્લેખનીય છે. એક બાજુ બુદ્ધિ અને જ્ઞાન તેમજ બીજી બાજુ અદમ્ય વૃત્તિઓ વચ્ચે તેઓ ભીંસાતા જ રહ્યા. અંધકારભર્યું અંગત જીવન અને ઉજ્જવલ લેખન સાહિત્ય એ બે એમના જીવનના વિરોધી દશ્યો છે. તેમની સ્મરણીય આત્મકથા આ વાત વગર છુપાવ્યે જાહેર કરે છે. વિવેચક વિશ્વનાથ ભટ્ટે મણિલાલને અર્વાચીન યુગના શ્રેષ્ઠ નિબંધકારો નર્મદ અને કાકાસાહેબની સાથે બેસાડ્યા છે. માત્ર ૪૦ વર્ષનું આયુષ્ય ભોગવી ૧-૧૦-૧૮૯૮ ના રોજ તેમનું અવસાન થયું. 'એક આત્માનુ', 'એક પ્રવાસી', 'અભેગમાર્ગ પ્રવાસી' એમ વિવિધ તખલ્લુસધારી મણિલાલને આજે સવાસો વર્ષ બાદ પણ ગુજરાત પ્રખર વિચારક તરીકે સન્માન આપે છે.

૨ ધર્માનંદ કોસંબી



બૌદ્ધ ધર્મના પ્રખર અભ્યાસ ધર્માનંદ કોસંબીનો જન્મ ૯-૧૦-૧૮૭૬ ના રોજ ગોવાના સાખવળ ગામે થયો હતો. બાળપણમાં જ હતાશાના શિકાર બન્યા, પરંતુ સંત તુકારામનું જીવનચરિત્ર હાથમાં આવતા વાંચી ગયા. અને હૃદયમાં શ્રદ્ધાદીપ પ્રગટ્યો. પૂના ના ડો.ભાંડારકરની મદદથી સંસ્કૃતનો અભ્યાસ શરૂ કર્યો. બૌદ્ધધર્મના જ્ઞાનની પ્રાપ્તિ અર્થે તેમણે ભારતમાં ઠેર ઠેર ભ્રમણ કરવું પડ્યું. છેક નેપાળથી સિલોન સુધી તેમની અવિરત યાત્રાઓ ચાલી. અમેરિકા, રશિયા, બ્રહ્મદેશ વગેરેનો પ્રવાસ ખેડીને બૌદ્ધ ધર્મના પ્રચાર-પ્રસાર માટે તેમને બૌદ્ધ ધર્મગ્રંથોનું ભાષાંતર કરવાનું કામ પણ સોંપેલું. 'વિશુદ્ધ મગ્ગ' તેમણે પ્રથમ રોમન અને ત્યારબાદ દેવનાગરીમાં સંપાદિત કરીને પ્રકાશિત કર્યો. તેમણે પોતાના જીવનકાળ દરમિયાન આઠ જેટલાં મૌલિક પુસ્તકો લખ્યાં હતાં. મહાત્મા ગાંધી સાથે તેમણે સત્યાગ્રહમાં પણ ભાગ લીધો હતો. દેશ-વિદેશના પ્રવાસોથી એમનું સ્વાસ્થ્ય કથળવા લાગ્યું. તેમની અંતિમ ઈચ્છા કાકા કાલેલકરને મળવાની હતી. તે ઈચ્છા પૂરી થઈ એટલે ઈ. ૧૯૪૭ માં મહાન સાધકનું પ્રાણપંખેરૂં આ જગતને છેલ્લી સલામ કરી ઊડી ગયું. હિંદમાં પ્રેમ અને કરૂણાને સમગ્ર એશિયામાં પ્રસરાવનાર પ્રો. કોસંબી માનતા કે, 'બૌદ્ધ ધર્મ મનુષ્ય માત્રની ઉન્નતિનો સાચો રાહ ચીંધી શકે તેમ છે.' ધર્માનંદ કોસંબીને બૌદ્ધ ધર્મ તત્વજ્ઞાનના 'વૈશ્વિક પંડિત' તરીકે ઓળખવામાં આવે છે.



૩ ડો. વાલ્ડમેર હાફકીન

મહાન રસીશોધક વૈજ્ઞાનિક ડો. વાલ્ડમેર હાફકીનનો જન્મ ઈ.૧૮૬૦ માં રશિયાના ઓડેસા શહેરમાં થયો હતો. સ્નાતક થયા પછી જીનીવા વિશ્વવિદ્યાલયમાં જીવશાસ્ત્રના મદદનીશ પ્રાધ્યાપક તરીકે નિમાયા. એવામાં લોર્ડ ડફરીન સાથે મુલાકાત થતાં તેમણે હાફકીનને પોતે શોધેલી કોલેરા વિરોધી રસીનો પ્રયોગ ભારતમાં કરવા વિનંતી કરી. ભારત આવીને એક જ વર્ષમાં પચીસ હજાર માણસોને તેમણે રસીનો લાભ અપાવ્યો. સમગ્ર વિશ્વમાં આ રસીની કદર થઈ. પેરીસ વિશ્વવિદ્યાલયે તેમને ડી. એસસી. ની ઉપાધિ આપી. બીજા અનેક માન સન્માન ડો. હાફકીનને પ્રાપ્ત થયાં. હિંદ સરકારે તેને સી. આઈ. ઈ. નો ખિતાબ આપ્યો. મુંબઈ અને પંજાબમાં પ્લેગ ફાટી નીકળ્યો ત્યારે ડો. હાફકીનની રસીનો ઉપયોગ કરવામાં આવ્યો હતો. તેમણે ઊભી કરેલી 'પ્લેગ રીસર્ચ ઈન્સ્ટિટ્યૂટ' ને મુંબઈ સરકારે 'હાફકીન ઈન્સ્ટિટ્યૂટ' નામ આપી વિશાળ પાયા પર મૂક્યું અને આ મહાન માનવતાવાદી વૈજ્ઞાનિકની કદર કરવાનો નમ્ર પ્રયાસ કર્યો. આ સંસ્થાએ રસી ઉપરાંત સાપના ઝેરની વિરૂદ્ધ કાર્ય કરતું રસાયણ પણ બનાવ્યું, જે બદલ વિશ્વના લોકો કૃતજ્ઞ છે. ૨૬-૧૦-૧૯૩૦ ના રોજ આ મહામાનવ પાર્થિવ જગત છોડી ગયા. ડો. હાફકીન મહાન વૈજ્ઞાનિક જ નહી, પણ મહામાનવ પણ હતા. સમસ્ત માનવ જાતને ઉપકારક થયેલી તેમની શોધોનું વિશ્વ સર્વદા ઋણી રહેશે.

લોનમેળામાં પ્રધાનશ્રી

તંત્રી નોંધ : આ કોલમ 'બેન્કર ની ડાયરી' માં બેન્ક સાથેના વ્યવહારો કરતા જે ઘટનાઓ ઘટેલ તેને સ્વ.શ્રી.લકુમ સાહેબે આકર્ષક વાર્તાઓ બનાવી સત્ય હકિકતો રજુ કરી વર્ણન કરેલ છે. જ્ઞાન સાથે સાહિત્ય અને બેન્કોના અનુભવો આ વાંચવાથી વાંચકને જાણવા મળે તે આ કોલમનો હેતુ છે.
- સહસંપાદક, સંગીતા રાજેશ દોશી

'બેન્કમાં લોન માટે કેટલા ધક્કા ખાધા હતા?' કેન્દ્ર સરકારના પ્રધાને ભીમલાદેવીને સીવણ મશીન આપતી વખતે હિન્દીમાં પૂછ્યું. 'ભીમલાદેવી કંઈ ખાસ સમજી નહિ. તે ફક્ત હાથ જોડીને ઊભી રહી. પ્રધાને બીજો પ્રશ્ન કર્યો. 'બેન્કના મેનેજરને કેટલા પૈસા આપ્યા હતા?' તેના જવાબમાં ભીમલાદેવી બોલી, 'કુછ નહિ.'

આ પ્રસંગ દક્ષિણ બિહાર (હવે ઝારખંડ) ના એક નાના ગામડાંનો હતો તેમાં કેન્દ્રીય પ્રધાનના કહેવાથી ગરીબ લોકોના લાભાર્થે બેન્કો તરફથી લોનમેળાનું આયોજન થયું હતું. પ્રધાનની સૂચના હતી કે લોનના લાભાર્થીઓને ચેક નહિ પણ જે વસ્તુ લોનથી ખરીદવાની હોય તે જ તેઓને રૂબરૂ સોંપવી.



લોનમેળાનું આયોજન એક નાના ગામમાં થયું હતું. આખા ગામમાં બળદગાડા, ઊંટગાડી, ગાય, ભેંસ, ટ્રેક્ટર, ખેતીના સાધનો, સીવવાના મશીન, ટાઈપ રાઈટર, કુંભાર, સુથાર, હજામ અને લુહારના ધંધાના સાધનો વગેરેથી ગામ આખું ઊભરાતું હતું.

કેન્દ્ર સરકારના નાણા ખાતામાંથી પ્રધાન આવેલા હોવાથી મોટી બેન્કોના ચેરમેન, મેનેજિંગ ડિરેક્ટર, જનરલ મેનેજરો અને સિનિયર ઓફિસરો હાજર હતા. ગામ નાનું હતું અને સવારથી જ લોકો ભેગા થવા લાગ્યા હતા. ગામમાં કોઈ હોટેલ કે રહેવાના સ્થળો ન હોવાથી બેન્કના ઓફિસરો સભાના સ્થળની આસપાસ ગરમીમાં આંટા મારતા હતા. કોઈ બેન્કના કર્મચારીએ તેના બોસના માથે છત્રી ખોલી હતી. કોઈ વળી લીમડાના ઝાડ નીચે ઊભા હતા. બેન્કના ઓફિસરો પ્રત્યે પોતાને કોઈ ખાસ માન નથી એવું કેન્દ્રના પ્રધાનના વર્તનથી જણાતું હતું. તેમણે તો જાહેર કર્યું હતું કે કોઈ બેન્ક વતી તેમને ફૂલોનો હાર પણ પહેરાવવાનો નહિ. કે શાલ અથવા અન્ય ભેટ આપવાની નહિ.

આ લોન મેળાના આયોજનની જવાબદારી કિશોર શાહની હતી. કિશોર શાહ એક રાષ્ટ્રીયકૃત બેન્કના ડિવિઝનલ મેનેજર હતા. તેની બેન્ક આ ક્ષેત્રના આર્થિક વિકાસ માટે બેન્કોએ જે કામ કરવાનું હતું તેમાં લીડ બેન્ક હતી.

દક્ષિણ બિહારમાં તે સમયે વીજળી, ટેલિફોન, ટ્રાન્સપોર્ટ વગેરેના સાધનો વિકસ્યા ન હતા. લોનમેળાના આગળના દિવસે કિશોર શાહના ઘરનો ટેલિફોન બંધ હતો. મેળાના આયોજન માટેની સૂચનાઓ તથા અન્ય બેન્કોને આપવાની માહિતી તેણે ઘરની સામે આવેલા એસ.ટી.ડી. બૂથમાંથી ફોન કરીને પહોંચાડી હતી. લોનમેળામાં તે વિસ્તારના ૫૦૦૦ લાભાર્થીઓને લોન આપવાનું જાહેર કરવાનું હતું અને તેમાંથી કેટલાકને પ્રધાનના હાથે વીજવસ્તુઓ સુપરત કરવાની હતી. બિહારના લોકોને રાષ્ટ્રીયકૃત બેન્કો લોન આપતી નથી. તેવી ફરિયાદ ત્યાંના ચીફ મિનિસ્ટરે કરેલી. તે અંગે ચીફ મિનિસ્ટરનો આક્રોશ એટલો બધો હતો કે એકવાર રાજ્યની બેન્કોનો સેમિનાર પટણા ખાતે એક હોટેલમાં હતો તેના ઉદ્ઘાટન માટે ચીફ મિનિસ્ટર આવેલા ત્યારે તેમણે તેમના ભાષણમાં કહેલું કે, 'મારા રાજ્યમાં આવી ફાઈવસ્ટાર હોટેલોમાં મિટિંગો કરીને તમે પ્રજાની સેવા નહિ કરી શકો. બસ આટલું જ કહેવા હું અહીં આવેલ છું.' તેટલું બોલીને ચીફ મિનિસ્ટર સભાસ્થાન છોડીને ચાલ્યા ગયા હતા.

બિહારમાં નાના ઉદ્યોગ અને વેપાર-ધંધાને લોન આપવામાં બેન્કોને વસૂલાતની મુશ્કેલી થતી. ધંધાદારીઓની માનસિકતા શિસ્ત કે નિયમોના પાલન માટેની હતી નહિ. ત્યાં નિયમોનું ઉલ્લંઘન સામાન્ય હતું. ટ્રેનના સ્લીપર કોચમાં રિઝર્વેશનથી સૂતેલા લોકોને ટિકિટચેકર સૂચના આપતો કે 'રાત્રી દરમિયાન કોઈ બારણું ખખડાવે તો ખોલવું નહિ. જો લોકો ડબામાં ઘૂસી જશે તો તેને હું પણ બહાર નહિ કાઢી શકું.' કેવી અરાજકતા ?

આમાંથી સ્થાનિક બેન્ક મેનેજરોએ પોતાના રસ્તા શોધ્યા હતા. દા.ત. આદિવાસીઓને લોનની રકમ વધુમાં વધુ આપાય તે માટે એકવાર કલેક્ટરે બેન્ક મેનેજરોને સૂચના આપી હતી. આદિવાસીઓનું કામ વાંસમાંથી ટોપલીઓ કે બીજી ચીજો બનાવવાનું હતું. વાંસ ખરીદવા માટે મોટી રકમની જરૂર ન પડે પણ એક શાખા મેનેજરે આદિવાસી દીઠ રૂ.૫,૦૦૦ મંજૂર કર્યા હતા. આટલી મોટી રકમના વાંસ એક આદિવાસી ખરીદે તો તેને રાખવાની પણ જગ્યા ન હોય. શાખા મેનેજરે લોનની રકમ આદિવાસીના બચત ખાતામાં જમા કરી અને જરૂર પૂરતી જ રકમ રોકડમાં આદિવાસીને આપી. આને કારણે તેની શાખાની

લોન વધી અને થાપાગ પાગ વધી. લોનના હમા સરકારી સબસીડી અને થાપાગમાં રાખેલ રકમથી વસૂલ થઈ ગયા. તેથી એની વસૂલાત નિયમિત થઈ. શાખા મેનેજરની વાહ વાહ થઈ.

દેશના અન્ય ભાગોમાંથી આવેલા બેન્ક મેનેજરો આવી ગેરરીતિઓ કરતા નહિ. તેઓ સામે સરકારી કામ ન કરતાં હોવાની ફરિયાદ રહેતી. જિલ્લા કક્ષાએ બેન્કોના કામકાજની સમીક્ષા થાય ત્યારે બેન્ક મેનેજરોની ટીકા થતી. એક મિટિંગમાં જિલ્લા કલેક્ટર એટલા ઉશ્કેરાઈ ગયેલા કે તેમાગે મિટિંગ દરમિયાન એક બેન્કના ગેરહાજર મેનેજરને જીપમાં લઈ આવવા હુકમ કરેલો. એકવાર એક બેન્કની શાખામાંથી બધા સ્ટાફને બહાર કાઢી, સરકારે ભલામાગ કરેલ લોન અરજીઓ મંજૂર ન થતી હોવાથી જિલ્લા પ્રશાસને શાખાને સીલ કરી દીધી હતી.

આ સ્થિતિમાં બેન્કો નાના માગસોને, વસૂલાતની પરવા કર્યા વિના વધુ લોન આપે તેવા દબાગ સાથે લોન મેળાનું આયોજન થયું હતું. કેન્દ્રના પ્રધાને લોન લેનારને 'ધક્કા' સાથે 'લાંચ' બાબતમાં ખાસ પૂછ્યું હતું.

એમાં હસ્તકલાના એક કારીગરે પ્રધાનને જાગાવેલું કે, 'તે હાથકારીગરીથી ચીજવસ્તુઓ બનાવે છે પાગ તેનું વેચાગ બહુ થતું નથી.' પછી પૂછેલું કે, 'સરકાર તેના વેચાગમાં મદદ કરશે?'

પ્રધાનશ્રી પાસે આ પ્રશ્નનો જવાબ ન હતો. બેન્કરોનું કહેવાનું હતું કે ફક્ત રૂપિયા આપવાથી ધંધા ચાલતા નથી. છતાં સરકારના કહેવાથી તે દિવસે લાખો રૂપિયાની લોનોનું વિતરાગ થયું હતું.

પ્રધાનશ્રીએ ગરીબ લોકોને લોન અપાવી તેનો ઉલ્લેખ તેમના ભાષાગમાં કર્યો. પરંતુ ધિરાગ લેનારને રકમની પરત ચુકવાગી વિશે કંઈ કહ્યું નહિ.

તે દિવસે એક પત્રકારે બેન્કના એક અધિકારીને પ્રશ્ન કરેલ કે, 'આટલી બધી લોન આપી ત્યારે તમને તેની વસૂલાતની ચિંતા નથી થતી?' જવાબમાં અધિકારી બોલેલા, 'લોનના ૫૦ ટકા સરકારની સબસીડીમાંથી મળશે. પછી ૨૫ ટકા રિઝર્વ બેન્કની ગેરંટીમાંથી મળશે. બાકીની રકમ અમને બીજા લોકોને વધારે વ્યાજે આપેલ લોનના નફામાંથી મળી જશે.'

બેન્કોનું સંચાલનચક્ર એટલે થાપાગો, ધિરાગ અને વસૂલાત; આ સુખી સંસારમાં સરકાર ખલનાયકની ભૂમિકા ભજવે તો બેન્કોનો સંસાર ખળભળી ઊઠે અને તેનો ભોગ બને થાપાગદારો તથા નિયમિત ટેક્સ ભરનારા...

લોનમેળામાં ૫૦ ટ્રેક્ટર-ટ્રેઈલરને લોન આપ્યાની જાહેરાત થઈ હતી. તેમાંથી એક ટ્રેક્ટર-ટ્રેલર ત્યાં હાજર હતું. તેમાં ટ્રેક્ટરને નંબરપ્લેટ હતી પાગ ટ્રેલર ઉપર નંબર ન હતો. તે અંગે પૂછતાં લોન લેનારે જાગાવેલ કે, 'એક નંબર લગાવવાના ૧૦૦ રૂપિયા આપ્યા છે, હવે અમે ટ્રેલરને નંબર લગાવવાના જ નથી.'

લોનમેળો લગભગ ચાર વાગ્યે પૂરો થયો. બધા વિખરાયા અને ફરી ગામમાં ધૂળ ઊડી.

અમારા બધા માટે દિનીબહેન ભરૂચા જમવાનું લાવ્યા હતા તેમાગે મોટરમાંથી ટિફિનો કાઢ્યાં.

જમતાં જમતાં દિનીબહેન બોલ્યા, 'બેન્કોનું રાષ્ટ્રીયકરાગ ક્યું ન હોત તો આવી કંઈ માથાકૂટ થાત?'

બીજા એક ઓફિસરે કહ્યું, 'જોજો સરકાર થાકી જવાની છે. બેન્ક ચલાવવી તેનું કામ નથી. પાછું ખાનગીકરાગ થઈ જવાનું.'

★★★★

જન્મદિનની શુભેચ્છાઓ

ચિ.દક્ષ

જન્મતારીખ : ૧૭/૧૦/૨૪





પિતા : ધ્રુવ રોહિતકુમાર કોટડિયા
માતા : મોનાલી ધ્રુવ કોટડિયા
દાદા : રોહિતકુમાર બાબુલાલ કોટડિયા
(સીઇ કેબિનેટ મંત્રી-ઉત્તર ગુજરાત ઝોન)
દાદી : ચેતનાબેન રોહિતકુમાર કોટડિયા
નાના : મનોજકુમાર પોપટલાલ શાહ
નાની : સોનલબેન મનોજભાઈ શાહ
અમદાવાદ રહેવાસી

ચિ.નિષ્ઠા

જન્મતારીખ : ૧૭/૦૮/૨૧



પિતા : રવિ સૂર્યકાન્ત શાહ
માતા : સોનાલી રવિ શાહ
ભાઈ : ચિ.હિતાંશ રવિ શાહ



દાદા : સૂર્યકાંત કાંતિલાલ શાહ (દેલવાડ)
(ઉપપ્રમુખ : શ્રી.ખે.દ.હુ.હિ.જૈન ચોખલા પંચ)
દાદી : સ્મિતા સૂર્યકાંત શાહ
નાના : શૈલેષકુમાર અમૃતલાલ શાહ (ભાલક)
નાની : ધર્મિષ્ઠાબેન શૈલેષકુમાર શાહ

॥ श्री वर्धमानाय नमः ॥



श्री महावीर पुराण

By प.पू.आचार्य सकलकीर्तिजी म.

तंत्री नोंध : ભગવાન મહાવીર ની જીવન વૃત્તાંત કથા ના સ્વરૂપે ઉપરોક્ત ગ્રંથ ના આધારે આપી રહ્યા છીએ. આ અગાઉ તેમના અનેક ભવો જેમાં ખાસ કરી ભગવાન આદિનાથના પૌત્ર મારીચ (ચક્રવર્તી ભરત મહારાજના પુત્ર) થી લઈ શરૂઆત થાય છે અને વિવિધ ગતિઓમાં ભ્રમણ કરતાં-કરતાં ભારતભૂમિમાં પશુ યોનિમાં **સિંહ** તરીકે અવતર્યો અને જ્યારે મૃગનો શિકાર કરી રહેલ હતો અને બે ચારણ ઋધ્ધિધારી મુનિરાજ ૧) જ્યેષ્ઠ ૨) **અમિત** તેજ નામના આકાશ માર્ગેથી આવ્યા અને તેને સંબોધન કર્યું... આખરે તેમ પણ કહ્યું કે તુ ભરતક્ષેત્ર માં ઉત્પન્ન થઈ **ચોવીસમા તીર્થંકર** બનીશ.... મુનિરાજે તરફથી જે વિશેષ સંબોધન સિંહ ને કરવામાં આવ્યું. (જે મારીચી નો જીવ હતો) અને હવે તેના સંસારનો અંત નિકટ આવી ગયેલ છે અને કેટલાંક ભવ કર્યા પછી તે રાજા સિધ્ધાર્થ અને ત્રીશલા માતાની કૂખે અવતરી **મુક્તિ સુંદરી** ના નાથ થશે....

આ બન્ને મુનિરાજોએ ભગવાન મહાવીર ના જીવ તેવા **સિંહ** ને સંબોધન કરતાં તે **સિંહ** ને **સમ્યગ્દર્શન** થયું અને તેનું મન **શુધ્ધચિત** થઈ ગયું. સમ્યગ્દર્શન વિના સમ્યકજ્ઞાન અને સમ્યકચારિત્ર હોતા નથી અને સમ્યગ્દર્શન જે જીવને થાય તે વધુમાં-વધુ પંદર ભવ સુધીમાં મોક્ષ પ્રાપ્ત કરે. સમ્યગ્દર્શન થયા પછી (અગાઉ ટાંકો કે બંધ બંધાયો ન હોય તો) તે જીવ સ્વર્ગ અને મનુષ્ય માં જ અવતાર ધારણ કરે.... હવે આગળ આચાર્ય તરફથી કથા તેમના જ શબ્દોમાં સાંભળો !

CA **અશોક એસ. મહેતા**, સલાહકાર તંત્રી

चतुर्थ प्रकरण

ऐहिक और अनन्त सुख, करते सदा प्रदान ;
करे सिद्ध शुभ कामना, वीरनाथ भगवान।

जो ऐहिक और पारलौकिक सुख प्रदान करने वाले है, जिनके पाद-पद्मों की सेवा इन्द्रादि देवगण किया करते है, उन जिनेन्द्र भगवान की भक्ति-भाव से मै वन्दना करता हूं।

पश्चात् त्रिपुष्ट का जीव नरक की यातनायें भोग कर पुनः इसी भारत में पशु योनि में उत्पन्न हुआ। गंगा तट पर एक विकट वन था। वन के चारों और वन-सिंह गिरि की विशाल पर्वतमालायें थी। वह नारकी जीव इसी गिरि पर सिंह के रूप में उत्पन्न हुआ। यहां इसकी आयु एक सागर पर्यन्त हुई और पशु-प्रवृत्ति के कारण हिंसा आदि कार्यो में रत हुआ, पर काल-लब्धि प्राप्त होने पर उस हिंसक जीव सिंह का शरीर-पात हो गया। उसने पुनः पशु योनि धारण की। इसबार भी सिंधुकूट के पूर्व हिमगिरि पर्वत पर वह सिंह रूप में उत्पन्न हुआ तथा पूर्व संस्कार के कारण वह बड़ा ही क्रूर स्वभाव का हुआ। उसके नख और दांत बड़े ही तीक्ष्ण थे।

एक दिन की घटना है - वह सिंह वन से एक मृग को मार कर लिये आ रहा था। वह बार-बार मृग के मांस को नोचता था और उसे भक्षण करता जाता था। उसी समय ज्येष्ठ और अमिततेज नामक दो चारणमुनि आकाश-मार्ग से कहीं जा रहे थे। उन्होंने उस क्रूर स्वभावी को देखा। उन्हें तीर्थंकर भगवान के पूर्व वचनों का स्मरण हो आया। वे दोनों महामुनि पृथ्वी पर उतरे और एक सुरम्य शिला पर आकर बैठ गये।

उस समय उन मुनिराजों की शोभा देखते ही बनती थी। सिंह भी थोड़ी दूर पर खड़ा था। कुछ समय बाद अमिततेज नाम के मुनिराज ने खड़े होकर कहा अरे वनराज। तू मेरे वचनों को ध्यान देकर श्रवण कर. जिस समय तू त्रिपुष्ट नरेश के रूप में था, उसी समय समस्त राजा तेरे आश्रय में थे। तू ने राज्य-लाभ की आकांक्षा से हिंसादि कार्यो को किया था और धर्म-दान आदि कार्यों की उपेक्षा की थी। केवल यही नहीं, तूने श्रेष्ठ-मार्ग को दोष लगा कर मिथ्या-मार्ग को बढ़ाने में सहायता पहुंचाई थी, ऋषभदेवके वचनों का भरपूर अनादर किया था। उसी मिथ्यात्व से उत्पन्न पापोदय से पीड़ित होकर तुझे अनेक दुःख भोगने पड़े। इष्ट-वियोग तथा अरिष्ट संयोग

से अनेक वेदनाय सहन करनी पड़ी है। पुन: उसी मिथ्या रूपी महान पाप से तू विभिन्न स्थावर और त्रस योनियों में भटकता रहा है।

किसी कारणवश तू पुन: किसी राजा के यहां उत्पन्न हुआ। वहां तेरा नाम विश्वनन्दी पड़ा। तूने पुन: संयम धारण किया और त्रिपुष्ट नाम का नारायण हुआ। आगे तू इसी भरत क्षेत्र में जन्म धारण कर संसार का हित करनेवाला चौबीसवां तीर्थंकर होगा, यह सर्वथा सत्य है। कारण जम्बूद्वीप के पूर्व विदेह में एक बार किसी ने श्रीधर नामक तीर्थंकर से पूछा था कि हे भगवान ! जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में जो चोबीसवां तीर्थंकर होगा, उसका जीव आजकल किस स्थान पर है। इस प्रश्नके उत्तर में भगवान ने जो कुछ कहा था, उसे मैंने तुम्हें सुना दिया । अतएव, अब तुम संसार-बन्ध के कारण ऐसे मिथ्यात्व को हलाहल समझ कर त्याग दो और सम्यक्त्व को ग्रहण करो. सम्यक्त्व धर्मरूपी कल्पवृक्ष का बीज है वह मोक्ष-मार्ग का प्रथम सोपान है। ऐसे शुद्ध सम्यक्त्व को धारण करने से तुम्हें तीनों संसार की विभूति, तीनों जगत में होनेवाले चक्रवर्ती आदि के सुख तथा अर्हंत पद जैसे पद उपलब्ध होकर अनन्त सुख की प्राप्ति होगी।

वस्तुत: सम्यग्दर्शन के समान न तो कोई धर्म है, न होगा। यह सम्यक्त्व ही कल्याण-साधक है। परन्तु मिथ्यात्वके समान तीनों लोकों में दूसरा पाप नहीं है। अतएव यह मिथ्यात्व ही सारे अनर्थों की जड़ है। उस सम्यक्त्व की प्राप्ति जीवादि सप्त तत्वों के श्रद्धान से तथा सर्वज्ञ देव, सद्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थ गुरुओं के श्रद्धान से होती है, जिसकी प्राप्तिसे ही ज्ञान-चरित्र को सत्य कहा जा सकता है। यह कथन भगवान जिनेन्द्र देव का है। अतएव तुम्हें चाहिए कि सम्यक्त्वके साथ ही उत्कृष्ट श्रावक के बारह व्रतों को धारण करों और अन्तिम काल में संन्यास व्रत ग्रहण कर प्राण त्याग करो। तुम अन्य सब प्रकार के हिंसादि पापों का परित्याग कर दो। अब तुम्हें संसार में भटकते रहने का बिलकुल डर नहीं रहा, अत: बुरे मार्ग का सर्वथा परित्याग कर शुभ मार्ग ग्रहण करो।

सिद्ध योगीके मुख-कमल से प्रकट हुए धर्मरूपी अमृत का पान कर सिंह (त्रिपुष्टके जीव) ने मिथ्यात्व-रूपी विष को उगल दिया। इस कारण वह अब शुद्धचित्त हो गया। पश्चात् उसने दोनों मुनियों की परिक्रमा की तथा उनके चरणों में मस्तक झुका कर देव, शास्त्र, गुरु का श्रद्धान-रूपी सम्यक्त्व ग्रहण किया तथा समय पाकर उसने संन्यास व्रत के साथ-साथ समस्त व्रतों को ग्रहण किया। पूर्व में इस सिंह का भोजन मांस के अतिरिक्त दूसरी वस्तु नहीं थी, इसलिये उसे व्रत धारण करने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। फिर भी उसने बड़े धैर्य के साथ व्रतों का पालन किया। आचार्य का कथन है कि वह कौनसा कार्य है, जो होनहार होने पर नहीं होता? अर्थात् सब ही कार्य अपने-आप हो जाता है।

दोनों मुनियों के उपदेशसे प्रभावित हो उस सिंहका चित्त शान्त हो गया और वह अत्यन्त संयमी हो गया। उसे देख कर ऐसा प्रतीत होने लगा कि वह वास्तविक सिंह नहीं, बल्कि चित्रित सिंह है। वह भूख, प्यास आदि सारी वेदनाओं को सहन करते हुए संसार की दु:खदायी स्थिति पर सर्वदा विचार किया करता था। धैर्य पूर्वक समस्त जीवों पर दया भाव दिखलाता हुआ वह आर्त-रौद्र ध्यानों को छोड़ने लगा। पुन: पापों को नष्ट करने वाला धर्म-ध्यान और सम्यक्त्व आदि का चिन्तवन करने लगा।

इस प्रकार उस सिंहने जीवन-पर्यन्त व्रतोंका पूर्ण रूप से पालन किया। अन्तमें समाधि मरण द्वारा उसकी मृत्यु हुई। वह व्रतादिकों के फलस्वरूप सौधर्म नामके प्रथम स्वगमें महान ऋद्धिधारी सिंहकेतु नामका देव हुआ। उसे दो घड़ी के अन्दर ही यौवनावस्था प्राप्त हो गई। वहां पर उसे अवधिज्ञान के द्वारा व्रतोंके शुभ फल ज्ञात हो गये। अत: धर्म के माहात्म्य की प्रशंसा कर वह धर्म-धारण करने में संलग्न हो गया।

पश्चात् वह देव अकृत्रिम चैत्यालयमें जाकर अष्ट द्रव्यों सहित अर्हंत देवकी पूजा करने लगा। मनुष्यलोक में अपने मनोरथों की सिद्धि के लिये नन्दीश्वरादि द्वीपों में उसने जिन प्रतिमाओं की पूजा की तथा गणधरादि मुनींद्रो को हर्ष सहित प्रणाम कर उनसे तत्वों का स्वरूप सुना एवं धर्म का उपार्जन कर अपने स्थान को लौट आया। उसने अपने पूर्व कृत पुण्योदय से देवियों की प्राप्ति की तथा विमानादि सम्पदाओं को प्राप्त किया।

इस तरह वह देव विभिन्न रूप से पुण्यका उपार्जन करता हुआ। सात हस्त प्रमाण दिव्य शरीरका धारक हुआ। उसकी आंखों के पलक सदा खुले रहते थे। उसे पूर्व में नारकी भूमि तक का अवधिज्ञान था और विक्रिया ऋद्धिका बल था। दो हजार वर्ष व्यतीत होने के उपरान्त हृदय से झरनेवाले अमृत का पान करता था तथा तीस दिन

के पश्चात् थोड़ी श्वास लेता था, देवांगनाओं का नृत्य देखा करता था तथा वनों-पर्वतों पर अपनी देवियों के साथ क्रीडा रत रहता था और अपनी इच्छा के अनुसार असंख्यात द्वीप-समुदों में विहार करता रहता था। इन्द्रिय-सुखरूपी समुद्र में मग्न उस देवने दो सागर की आयु प्राप्त की। उसका शरीर धातु, मल और पसीना से सर्वथा रहित था। इस प्रकार श्रेष्ठ चारित्र पालन द्वारा उपार्जन किये हुए पुण्य के प्रबल प्रताप से उसे भोगोपभोग की सारी सामग्रियां प्राप्त हुई। इस प्रकार भोगोपभोग में उसने कितना समय बिताया, यह उसे ज्ञात न हो सका।

धातकीखण्ड के पूर्व विदेहमें मंगलावती नाम का एक देश है। उसके मध्य भाग में विदयार्द्ध पर्वत है। यहह पर्वत दो सौ कोस ऊँचा है। उसकी उत्तर श्रेणी में कनकप्रभ नामका एक बड़ा ही रमणीक नगर है। वहां विद्याधरों का राजा कनकपुंग राज्य करता था। उसकी रानी का नाम कनकमाला था। सिंहकेतु नाम का देव स्वर्गसे चय कर कनकमाला रानी के गर्भ से सुवर्ण की कान्तिके समान कनकोज्वल नाम का पुत्र हुआ। राजा कनकपुंगने पुत्र उत्पन्न होनेके आनन्द में जैन-मन्दिरमें जा कर पंचकल्याणक की पूजा बड़ी भक्ति के साथ की। इसके पश्चात् दानादि से बन्ध, सज्जनों तथा दीन-दुःखियों आदि को सन्तुष्ट कर के नृत्य, गीतसे जन्मोत्सव मनाया। वह रूपवान बालक द्वितीया के चन्द्रमा की भांति क्रम-क्रम से बढ़ने लगा। वह बालक दुग्धपान, वस्त्र अलंकारादि परिधान आदि बाल-सुलभ कार्यों से सबको प्रसन्न किया करता था। वह थोड़े ही समय में अनेक शास्त्रों का पारंगत हो गया और सर्व गुणों से सम्पन्न हुआ।

पश्चात जब वह युवावस्था को प्राप्त हुआ तो उसका विवाह उसके मामा की पुत्री कनकवती के साथ सम्पन्न हुआ। एक दिन वह कुमार अपनी पत्नीके साथ महामेरु पर्वत पर आत्म-कल्याण के लिये चैत्यालयों की पूजा तथा क्रीड़ा करने गया था। उस स्थान पर आकाशगामिनी आदि ऋद्धियों वाले अवधिज्ञानी मुनीश्वर को देख भक्तिपूर्वक उनकी तीन प्रदक्षिणा दे उन्हें नमस्कार किया, पश्चात् धर्ममें अभिरुचि रखने वाला वह कुमार धर्म के सम्बन्ध में मुनिराज से प्रश्न करने लगा।

उसने पूछा-भगवान, मुझे निर्दोष धर्मका स्वरूप बतायें, जिससे मोक्ष-मार्ग में सहायता मिल सके। कुमार के वचनों को श्रवण कर मुनि ने कहा बुद्धिमान । तू एकाग्र मन से सुन, मैं तुझे धर्म का स्वरूप बतलाता हू। जो संसार-समुद्रमें डूबते हुए जीवों का उद्धार कर मोक्ष-स्थान पर ले जाये अथवा उसे तीनों जगत का स्वामी बनावे, उसे धर्म कहते हैं। वस्तुतः धर्म वह है, जिससे इस भवमें सम्पदाओं की प्राप्ति और मनोकामनाओं की पूर्ति होती है तथा दुःख आदि भयानक आपत्तियों का सर्वथा नाश होता है। केवल यही नहीं, धर्मसे तीनों लोकोंमें प्रशंसा होती है और परभव में राज्य आदिकी विभूति, सर्वार्थसिद्धि पद, तीर्थंकर पद, बलभद्र, चक्रवर्ती आदि पदों की प्राप्ति सुलभ होती है। जिसका उपदेश केवली ने दिया है, जो अहिंसा-स्वरूप और निष्पाप है, वही धर्म है दूसरा कोई भी धर्म नहीं है।

वह धर्म अहिंसा, सत्य, अचौर्य, परिग्रह-त्याग, ईर्या भाषा, एषणा, आदान-निक्षेपण, उत्सर्ग, मनो-गुप्ति, वचन-गुप्ति, काय-गुप्ति-इस भेद से तेरह प्रकार का है। इसे वीतरागी मुनि धारण करते हैं अथवा उत्तम क्षमादि स्वरूप दश परम धर्म को मोहेन्द्रिय-रूपी चोरोंको परास्त करने के लिये योग धारण करते हैं। अतएव हे बुद्धिमान! तू मुनि-धर्मको धारण कर और कुमार अवस्था में ही शीघ्र कामादि शत्रुओंको तप-रूपी खडगसे मार, सदा चित्तमें धर्मका ध्यान कर, धर्मसे अपनेको शोभायमान कर, तू धर्म के लिये गृह का त्याग कर, धर्म के अतिरिक्त और दूसरा आचरण न कर, सदा धर्म की शरण ग्रहण कर और धर्म में ही स्थिर रह। धर्म सदा तेरी रक्षा करेगा।

विशेष कहने की आवश्यकता नहीं। अब तू शीघ्र से शीघ्र मोहरूपी महान शत्रुको परास्त कर मुक्ति के लिये धर्म अंगीकार कर। इस प्रकार धर्मापदेश करनेवाले उन मुनि के वचनों को सुन कर उसे संसार, शरीर, स्त्री आदि भोगों से विरक्ति उत्पन्न हो गई। उसने मन में विचार किया कि परोपकारी मुनि महाराज ने मेरे हित के लिए ही धर्मोपदेश किया है, अतः मुझे मोक्ष प्राप्ति के लिये शीघ्र ही श्रेष्ठ तप को ग्रहण करना चाहिए। कारण, न जाने किस समय मेरी मृत्यु हो जाय। जो 'काल' गर्भ के बालक को मार डालता है, उसका क्या ठिकाना? जब यमराज, अहमिन्द्र, देवेन्द्र आदि महान पुण्यवानों तकको नहीं छोड़ता तब हम जैसे पुण्यहीन व्यक्तियोंके जीवित रहने की क्या आशा? वृद्ध होने पर भी धर्म का त्याग नहीं करना चाहिये। जो धर्म-धारण नहीं करते, वे पाप का

बोझ लेकर यमराज का ग्रास हो नरकादि योनियों में परिभ्रमण किया करते हैं। अतएव भव्य जीवों को सर्वदा धर्म का आश्रय ग्रहण करना चाहिए। जब कभी भी अपनी मृत्यु हो सकती है, ऐसी आशंका कर समय को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए।

ऐसा विचार कर उस बुद्धिमान ने वाह्य और आभ्यन्तर दोनों प्रकार के परिग्रहों का त्याग करर दिया एवं अपनी पत्नी को मायाविनी समझ त्याग कर मन-वचन-कर्म तीनों के द्वारा नमस्कुत जिन-दीक्षा ग्रहण कर ली, जिससे स्वर्ग और मोक्ष के मार्ग सरल हो जाते हैं। कनकोज्वल कुमार ने आर्त-रौद्ररूप खोटे ध्यान तथा कृष्णादि खोटी लेश्याओं को छोड़ कर धर्म-ध्यान में लीन हो शुद्ध लेश्या धारण की। वह चारों विकथा-रूप वचनों को त्याग कर धर्म-कथा में लीन हुआ। ध्यान की सिद्धि के लिए उसने वैराग्य उत्पन्न करने वाले स्थान जैसे गुफा, वन, पर्वत, श्मशान और निर्जन स्थान आदि की शरण ली। धर्मोपदेश और शास्त्रों का वह बहुत ब ड़ा ज्ञाता हुआ।

मुनि-कुमार ने वन, ग्राम, देश आदि स्थानों में विहार कर कर्मो को विनष्ट करने वाला बारह प्रकार के तपों का आचरण किया। इस प्रकार उन मुनि ने मूल-गुणों का तथा शास्त्र में वर्णित संयम का पालन मृत्यु पर्यन्त कर अन्त समय चारों प्रकार के आहारों का त्याग तथा शरीर का ममत्व छोड़ कर संन्यास धारण कर लिया। अन्त में उन्होंने धैर्यपूर्वक भूख-प्यास आदि परीषहों को जीत कर समाधि के समय धर्म-ध्यान से प्राण का परित्याग किया। उक्त तप के प्रभाव से इन्हे लांतव नाम के सातवें स्वर्ग में महान ऋद्धिधारी देव-पद प्राप्त हुआ और सुख प्रदान करने वाली सारी सम्पदायें उपलब्ध हुई।

इन्होंने स्वर्ग में भी पूर्वकृत तपों के प्रभाव और उनके फलों को अवधिज्ञान द्वारा जान कर दृढ़चित्त हो धर्म की सिद्धि के लिये त्रैलोक्य स्थित जिनालयों की वन्दना एवं मुनिगण आदि की पूजा करते हुए महान पुण्य का उपार्जन किया। इस पुण्य फल से उन्हें तेरह सागर की आयु तथा पाँच हाथ ऊँचा शरीर प्राप्त हुआ। वे तेरह हजार वर्ष बाद हृदयमें झरते हुए अमृत का सेवन करते थे और छः मास के पश्चात् सुगन्धित श्वास लेते थे। उनका अवधिज्ञान तथा विक्रिया ऋद्धि नरक की तीसरी भूमि तक थी। वह देव सप्त धातु, मल-पसीना रहित दिव्य शरीर वाला हुआ। वह सम्यग्दृष्टि सदा शुभ-ध्यान में तथा जिन पूजा में लीन रहता था। उसे देवियों के नृत्य, गीत आदि सुख-सामग्रियां उपलब्ध थीं। वह शुभ भावनाओं का चिन्तवन करने वाला देवों द्वारा पूज्य हुआ।

अथानन्तर जम्बू द्वीप के कौशल नामक देशमें अयोध्या नाम की एक नगरी है। वह नगरी अत्यन्त रमणीक तथा भव्य जनों से भरी हुई है। वहां के राजा का नाम वज्रसेन था और उसकी रानी का नाम शीलवती था। वह देव स्वर्ग से चय कर इन दोनों के यहां हरिषेण नामक उसका पुत्र हुआ। राजा ने बड़े आनंद के साथ पुत्र का जन्मोत्सव मनाया। हरिषेण कुमारावस्था में ही राजनीति के साथ-साथ जैन सिद्धान्तोंका भी बड़ा जानकर हुआ। वह रूप, गुण, कान्ति आदि सभी गुणों से विभूषित था। उत्तम वस्त्राभूषणों से सुशोभित हरिषेण कुमार देव के समान सुन्दर प्रतीत होता था।

पश्चात् यौवनावस्था में कुमार का विवाह अनेक सुन्दर कन्याओं के साथ हुआ। राजा ने पुत्र को योग्य समझ कर उसे राज्य-पद समर्पित कर दिया। वह बड़े आनंदके साथ राज्य लक्ष्मीका उपभोग करने लगा। वह गृहस्थ-धर्म की सिद्धि के उद्देश्य से बड़ी शुद्धतापूर्वक सम्यक्त्व का पालन करने लगा। अष्टमी और चौदश के दिन वह पाप कर्मो को त्याग कर प्रोषध व्रत का आचरण करता था। सवेरे शय्या त्याग करने के साथ ही उसका सामायिक तथा स्तवन-पाठ आरंभ हो जाता था। इसके बाद वह स्वच्छ वस्त्र से युक्त होकर अर्थ-धर्म-काम आदि की सिद्धि के लिये जिनालय में जाकर देव-पूजा करता था। मान-कषाय आदि दुर्गुणों से मुक्त होकर सुपात्रों को विधिवत दान दिया करता था। उसका आहार दान स्वादिष्ट और प्रासुक हुआ करता था।

वह जितेन्द्रिय सन्ध्याके समय कल्याणकारक सामायिक आदि उत्तम कार्य सम्पन्न किया करता था। केवल यही नहीं, बल्कि धर्म-तीर्थकी प्रवृत्तिके लिए वह अर्हंत, केवली, योगीन्द्र और मुनीश्वरोंकी संघ-यात्रामें सम्मिलित हुआ करता था। वह राजा सुख-समुद्र-रूप तत्व-चर्चा तथा श्रेष्ठ धर्मो की श्रवण किया करता था। उसे साधर्मी भाइयों से बड़ी प्रीति थी। उनके गुणों से मुग्ध होकर वह उनका बड़ा सम्मान करता था। अनेक प्रकार के आचरणों का पालन करता हुआ वह राजा धर्म के पालन के फल से प्राप्त भोग्य सामग्रियों का उपभोग करने लगा। अतएव है भव्य पुरुषों ! यदि तुम श्रेष्ठ सुख की उपलब्धि चाहते हो तो कठोर प्रयत्न करके भी धर्म को धारण करो।

Live Life Fully, Seize The Day

An interrupter can suddenly change the course of one's life. This happened when prince Siddhartha stepped out of the protected palace environment and encountered the reality of old age, sickness and death. The 'inter-rupter event' triggered his long search for their source. Years of observation led to the discovery of the sole generator of human suffering, dukkha. Craving wasthe main culprit, fuelled by the interplay of the poisionous triad of ignorance-delusion, greed-attachment, aversion-hatred, which contribute to our misappre-hension and cause disillusionment.

Siddhartha's search and rigorous discipline culminated in the transformation of the young prince to the Buddha, the awakened one, and beginning of Buddhism. Buddhism enumerates three types of suffering. The first set is suffering of suffering-dukkha-dukkha covering physical, emotional, pain of birth, ageing, sickness and death.



The second type is viparinama dukkha, constant change, linked to anitya, impermanence and transience; best explained by the wearing off of glitter of the new-things and relationships, a swing between attraction and repelling.

The third form sankhara dukkha-realisation of the all-pervasive sense of insecurity, and ground lessness of one's existence. This suffering is existential due to not accepting the illusory nature of existence, trapping one in samsara, leading to recurrence of cycle of rebirth, or 'wandering' and perpetuating the discontent of the unenlightened.

The Buddha offered a path that dispels the ignorance perpetuating dukkha. The odds could be overcome, neither by undue optimism or pessimism, nor by asceticism or indulgence, but by the dual virtues of sobriety and moderation. It requires faith and confidence to confront the most brutal facts of one's current reality and recognise the detractors in life's sensory festival.

Buddhism throws light on the consequences of unexamined lived existence. The invitation is to reimagine and rededicate ourselves to the deep understanding of the effects of suffering and unbinding our network of affinities, possessions and attachments, at the core of which lies avidya or ignorance. The saving knowledge, prajna, helps identify the operating dynamics called the Four Noble Truths and the way out though The Eightfold Path ethics, shila, of appropriate action, speech and livelihood. Next, dhyan, control of mental processes, proper effort, mindfulness and concentration. And finally, wisdom, prajna, development of insight into the nature of reality, including correct view and intention.

The impact of the second and thrd suffering types depends on our degree of denying, masking, mislabelling, or knowingly resisting the reality that is staring at us, throwing us into the alternatting swing of ecstasies and agonies.

There is no life without pain, but lessening suffering is optional. Philosophers sought to reduce the effect of one aspect of dukkha-dukkha, the death dread, Patanjali's abhinivesha, by being constantly reminded of mortality in the phrase memento mori, or maranasati. Every jolt should be a wake-up call to the fact that we are guests and not permanent residents.

None of these imply staying in a permanent state of non-enjoyment of good things in life and circumstances, Sometimes memento mori is followed by memento vivere remember the death but remember to live. Which gives us Horance's carpe diem, seize the day.

Source : T.O.I., Meena Om

ADK

દેશનાં વિવિધ રાજ્યોની આ બધી વિશ્વ-પ્રસિદ્ધ સાડીઓનું શું થશે?

એક સમય હતો કે જ્યારે આપણે ત્યાં માંડ ૧૨-૧૩ વરસની ઉંમર થાય અને, છોકરી સાડી પહેરવાનું શરૂ કરી દેતી. અત્યારે એ જમાનો છે કે જ્યાં પોતાનાં છોકરાંને ત્યાં છોકરાં આવી ગયાં હોય તોયે ઘણી સ્ત્રીઓએ અંગ પર સાડી કદી અડાડી નહિ હોય! હવે, એવી સ્ત્રીઓ જડવી બહુ અઘરી નથી કે જેઓએ પોતાની આખી જિંદગીમાં સાડી પહેરી જ નહિ હોય.

આપણા દેશમાં મંદિરોમાં/છબીઓમાં/પ્રતિમાઓમાં દેવીઓ-માતાજીઓ વગેરેનાં સ્વરૂપ તમે જોયો તો, તે બધાં તમને સાડીમાં જ દેખાશે. ફિકર એ વાતની છે કે, સ્ત્રીઓ આ રીતે સાડી પહેરવાનું છોડી રહી છે ત્યારે આપણા દેશનાં વિવિધ રાજ્યોની સુખ્યાત સાડીઓનું ભવિષ્ય શું? જે સાડીઓનું ભવિષ્ય લગભગ ખતરામાં આવી ગયેલું છે તે બધી સાડીઓ પર અહિ ઉપર-ઉપરથી નજર ફેરવી લઈએ.

કાંજીવરમ સિલ્ક સાડી (તામિલનાડુ)

તામિલનાડુની આ પ્રખ્યાત સાડી જે શુદ્ધ રેશમમાંથી બનાવવામાં આવે છે. તામિલનાડુના કાંચીપુરમ ક્ષેત્રમાં આ સાડી બનતી હોવાથી તેનું નામ 'કાંજીવરમ સિલ્ક સાડી' પડી ગયું. વીસેક વરસ પહેલાં ભારત સરકારે આ સાડીને ભૌગોલિક સંકેત 'જીઆઈ' માન્યતા આપી છે. આ સાડીનો ઈતિહાસ ૪૦૦ થી વધુ વરસ જૂનો છે. ભારતના સાંસ્કૃતિક વારસાનો એક મહત્વપૂર્ણ હિસ્સો છે આ કાંજીવરમ સાડી.

બનારસી સાડી (ઉત્તર પ્રદેશ)

નામ બનારસી છે તો, સ્વાભાવિક રીતે જ સમજમાં આવી જાય છે કે.... ઉત્તર પ્રદેશના વારાણસી કહેતાં કાશી (બનારસ) નગરીમાં આ સાડી બનાવવામાં આવતી હશે. એક જમાનો હતો કે, કાશીની અર્થવ્યવસ્થાનો મુખ્ય સ્તંભ આ બનારસી સાડી હતી! જો કે તે પછી બનારસી સાડીઓ બનારસ ઉપરાંત ચંદોલી-ઝોનપુર-આઝમગઢ-મિરઝાપુર-મઉ-સંત રવિદાસ નગર વગેરે શહેરોમાં પણ તૈયાર થવા લાગી. અને, આજે તો આ સાડીનો ઉદ્યોગ ભયંકર પડકારો વચ્ચે ડચકિયાં ખાઈ રહ્યો છે. બનારસી સાડી હોય એટલે, હજુ આજેય લોકો તેની ઉપર શુદ્ધ સોનાનું જરીકામ થયેલું હોવાની અપેક્ષા રાખે છે.

ચિકનકારી સાડી (ઉત્તર પ્રદેશ)

બધી સાડીઓમાં ચિકનકારી સાડી તૈયાર થવામાં સૌથી વધુ સમય લાગે છે! તે ખૂબ મહેનતનું કામ છે અને તે તૈયાર કરતા કારીગરોના નામ પરથી સાડીનું નામ પણ 'ચિકનકારી' પડ્યું છે! એવું માનવામાં આવે છે કે, ચિકનકારી કલા ભારતમાં મોઘલો દ્વારા પ્રવેશી હતી. ૨૦૦૮ ની સાલમાં ચિકનકારી સાડીને ભારત સરકારે ભૌગલીક સંકેત 'જીઆઈ' દ્વારા માન્યતા આપી છે. ઉત્તર પ્રદેશનું લખનૌ આ ચિકનકારી સાડીઓનું એક મહત્વપૂર્ણ કેન્દ્ર ગણાય છે.

બાંધણી (ગુજરાત)

ગુજરાતની બાંધણીઓ ખરીદવા માટે આધુનિક યુગમાં પણ દેશદેશાવરથી મહિલાઓ ગુજરાતની મુલાકાતે આવતી રહે છે. સુતરાઉ કપડામાંથી બાંધણી બનાવવામાં આવે છે અને કારીગરો દ્વારા આ સાડી પર અમુક ખાસ પ્રકારની ગાંઠો મારવામાં આવે છે જેને લીધે બાંધણી પોતાની અલગ જ પ્રકારની ઓળખ બનાવી શકી છે. ગુજરાતની બાંધણી કલા કોઈ બહારથી અહીં લાવ્યું નથી બલ્કી ગુજરાતે જાતે જ બાંધણીની કલા અહિ વિકસાવી છે. ઘણી સ્ત્રીઓ આ બાંધણી માટે રીતસર ગાંડી હોય છે! આ બાંધણી પાકિસ્તાનમાં 'ચુનરી' તરીકે ઓળખાય છે. ઈ.સ. પૂર્વે ૪૦૦૦ વર્ષથી વધુ જૂની છે બાંધણી! એટલે કે, બાંધણી કળા ૬૦૦૦ વર્ષ પહેલાં પણ ભારતવાસીઓ જાણતા હતા! બાંધણી ઘણે ઠેકાણે 'બંધેજ' તરીકે પણ ઓળખાય છે.

નૌવારી સાડી (મહારાષ્ટ્ર)

મહારાષ્ટ્રમાં નૌવારના કુશળ કારીગરોએ જે સાડીઓ બનવી તે નૌવારી સાડી તરીકે જગતભરમાં વિખ્યાત છે. શુદ્ધ રેશમ અને સુતરના દોરામાંથી નૌવારી સાડી બનાવવામાં આવે છે. મરાઠી ભાષામાં નવ ગજ માટે ખાસ નૌવારી શબ્દ છે... નૌવારી સાડીની લંબાઈ ૯ ગજ જેટલી હોય છે. નૌવારી સાડી ધોતિયાની માફક પહેરવાની હોય છે... નૌવારી સાડી પહેરીને સ્ત્રી બહુ જ સરળતાથી ગૃહકાર્યો કરી લઈ શકે છે તેમજ બહાર ફરવા-ફરવા-દોડવાનું અગર અન્ય કોઈ પ્રકારના પરિશ્રમ કરવાનું પણ નૌવારી સાડીમાં સરળ રહે છે.

તાંત સાડી (પશ્ચિમ બંગાળ)

બંગાળી સ્ત્રીઓ પરંપરાગત રીતે, જે પાતળી અને કૈંક પારદર્શક સાડીઓ પહેરે છે તે જ તાંત સાડીઓ છે. બંગાળમાં ૧૫ મી સદીથી આ તાંત સાડીઓ બનાવવાનું શરૂ થયેલું. મોઘલ બાદશાહોએ પણ તાંત સાડીના વિકાસમાં ખુબ રસ લીધો હતો. ૧૬મી-૧૭મી સદીમાં તાંત સાડીઓનું આકર્ષણ બંગાળમાં ચરમ કક્ષાએ હતું! બ્રિટીશ સરકારે આ તાંત સાડીઓને નષ્ટ કરવા માટે અથાગ પ્રયત્નો કર્યા પણ તાંત સાડીઓનો ઇતબો આજે પણ બરકરાર છે. તાંત સાડીઓને સૌ પ્રથમ વાર ધોવાની હોય ત્યારે તેને સિંધવયુક્ત ગરમ પાણીમાં થોડોક સમય પલાળી રાંખવામાં આવે છે.

બોમકાઈ સાડી (ઓરિસ્સા)

સાડીને છેડે ઘન-સમૃદ્ધિના પ્રતીક સમાન માછલીની ભાત ધરાવતી બોમકાઈ સાડી ઓરિસ્સામાં રોજીંદા જીવનમાં હોંશભેર પહેરવામાં આવતી. ઓરિસ્સાના ગંજમ જિલ્લામાં બોમ્કાઈ ગામે આ સાડી બનવવાની શરૂઆત થયેલી તેથી, સાડીનું નામ પડ્યું બોમકાઈ સાડી ! વિવિધ ફેશન શો વગેરેમાં પણ તમને સૌંદર્યસામ્રાજ્ઞીઓ દ્વારા બોમકાઈ સાડી પહેરેલી જોવા મળશે. ૨૦૦૯ માં ભારત સરકારે આ સાડીને ભૌગોલિક 'જીઆઈ' સંકેત આપ્યો જેથી તેનું સાંસ્કૃતિક મહત્વ ખૂબ વધી ગયું.

ચંદેરી સાડી (મધ્ય પ્રદેશ)

મધ્ય પ્રદેશના ઉત્તર ક્ષેત્રમાં ચંદેર નામે એક શહેર છે... આ શહેરમાં જે ખાસ પ્રકારની સાડીઓ બનાવવામાં આવે છે તે ચંદેરી સાડી તરીકે પ્રખ્યાત છે. કોટન અને સિલ્ક બંને જાતનાં કાપડમાં આ સાડીઓ તૈયાર થાય છે... સામાન્ય રીતે, સિંગલ કલરમાં ચંદેરી સાડીઓ બનાવવામાં આવે છે જે ખૂબ લોકપ્રિય થઈ છે. મધ્ય પ્રદેશની સ્ત્રીઓને આ ચંદેરી સાડીઓનું ખૂબ ઘેલું હોય છે. બીજી અને સાતમી સદીની વચ્ચે ચંદેરી સાડીઓની પરંપરા શરૂ થઈ હોવાનું માની શકાય.

કાસવુ સાડી (કેરળ)

સફેદ અથવા ભૂરા અથવા નારંગી અથવા લીલા અથવા હલકા પીળા અથવા હલકા ગુલાબી રંગમાં કાસવુ સાડી બનાવવામાં આવે છે. કાસવુ સાડી કેરળ પરંપરાની એક મશહૂર સાડી છે. કાસવુ સાડીની એક વિચિત્ર વાસ્તવિકતા એ છે કે, આ સાડીઓ સ્ત્રીઓ અને પુરૂષો બંને પહેરે છે ! ગૌતમ બુદ્ધના સમયગાળા પહેલાં પણ કાસવુ સાડી કેરળમાં પહેરવામાં આવતી હતી. કેરળમાં અમુક ધાર્મિક પ્રસંગો એવા પણ ઉજવવામાં આવે છે જેમાં કાસવુ સાડીઓ પહેરવી લગભગ ફરજીયાત હોય છે.

મુગા સાડી (આસામ)

આસામમાં પેદા થતા જંગલી મુગા રેશમમાંથી મુગા સાડી તૈયાર કરવામાં આવે છે. આસામમાં કન્યાઓ લગ્ન હોય તે દિવસે મોટે ભાગે મુગા સાડી જ પહેરતી જોવા મળે છે. મુગા રેશમ ખૂબ જ ટકાઉ અને મજબૂત હોય છે. મુગા સાડીને ૨૦૦૭માં ભારત સરકારે ભૌગોલિક સંકેત 'જીઆઈ' નો દરજ્જો આપ્યો છે. મુગા સાડીની એ ખાસિયત છે કે, તે જેમ-જેમ ધોવાતી જાય તેમ-તેમ વધુ આકર્ષક બનતી જાય છે.

કુલકારી સાડી (પંજાબ)

સાડીની બોર્ડર પર ફૂલ-પાન-લતા જેવી ડિઝાઈન ધરાવતી હોવાથી જ પંજાબની પ્રખ્યાત સાડીઓને કુલકારી સાડી જેવું નામ આપવામાં આવેલું છે. લગભગ તમામ પ્રકારનાં કાપડમાંથી કુલકારી સાડી બનાવવામાં આવે છે. સિંધ પ્રદેશમાં જે ગુલકારી નામે પ્રચલિત થઈ તે જ આ પંજાબની કુલકારી સાડી. પંજાબની કુલકારી સાડીઓનું પ્રચલન ઈ.સ.૧૯૫૦ સુધી તેના ચરમબિંદુ પર રહ્યું. આધુનિક યુગમાં સાડીઓનું ભવિષ્ય જ જ્યાં અદ્ધર થઈ રહ્યું છે ત્યાં આ કુલકારી સાડીની તો બિચારીની શું વિસાત?.

કોટા સાડી (રાજસ્થાન)

રાજસ્થાનના કોટા શહેરમાં પારંપારિક પદ્ધતિએ લગભગ ૩૦૦ વરસથી જે વિશિષ્ટ પ્રકારની સાડીઓ બનાવવામાં આવે છે તે જગતમાં કોટા સાડી તરીકે મશહૂર છે. કોટા સાડીનું કાપડ સુતર-રેશમ બંનેના સંયોજનથી બનાવવામાં આવેલું હોય છે. કોટા સાડીનું કપડું ખૂબ ટકાઉ-મજબૂત હોય છે. કોટા સાડી, દેશના રાજસ્થાન પંથકની એક અણમોલ વિરાસત છે. પહેરવામાં ખૂબ હલકી-હવાદાર-મુલાયમ એવી કોટા સાડીઓ સ્ત્રીઓને ખૂબ આરામદાયક વરતાતી હોય છે.

ગડવાલ સાડી (તેલંગના)

તેલંગના રાજ્યના જોગુલમ્બા ગડવાલ જિલ્લાના ગડવાલમાં એક ખાસ પ્રકારની ડિઝાઈનવાળી બનાવવામાં આવે છે જે ગડવાલ સાડી તરીકે વિશ્વપ્રસિદ્ધ છે. ગડવાલ સાડીને પણ સરકાર દ્વારા ભૌગોલિક સંકેત જીઆઈ આપવામાં આવેલ છે. ભગવાન તિરૂપતિ બાલાજીનો બ્રહ્મોત્સવ તેમની પ્રતિમાને ગડવાલ સાડીથી સુસજ્જિત કરીને આરંભ કરવામાં આવે છે ! ઈ.સ. ૧૯૪૬ માં રતન બાબૂ રાવ નામક એક વેપારીએ ગડવાલ હેન્ડલૂમ સેન્ટરની સ્થાપના કરી હતી અને આ કેન્દ્રએ ગડવાલ સાડીના પ્રસાર-પ્રચાર માટે સારૂં એવું કામ કર્યું.

પોચમપલ્લી સાડી (તેલંગના)

દેશનું તેલંગના રાજ્ય ગડવાલ સાડી ઉપરાંત, બીજી એક સાડી 'પોચમપલ્લી' માટે પણ ખૂબ જાણીતું છે એ અહિ ભૂલવું નહિ જોઈએ. ઈ.સ. ૨૦૦૫ દરમ્યાન તેલંગનાની પોચમપલ્લી સાડીને ભૌગોલિક સંકેત હેઠળ 'જીઆઈ' આપી ત્યાંની પરંપરા-સંસ્કૃતિની સરકાર દ્વારા સન્માન કરવામાં આવેલું છે. ઈન્ડિયન એરલાઈન્સમાં વરસો સુધી ક્રૂનો ગણવેશ પોચમપલ્લી સાડી રહ્યો હતો ! તેલંગનામાં ૮૦ ગામડાઓનો એક સમૂહહ પોચમપલ્લી તરીકે ઓળખાય છે. ત્યાંની સરકારે ૨૦૧૦ માં પોચમપલ્લીને પોચમપલ્લી (૧) તેમજ પોચમપલ્લી (૨) એમ બે વિભાગોમાં વહેંચી કાઢ્યું ! ૨૦૧૮ ના વર્ષમાં સરકારે પાંચ રૂપિયાની ટપાલ ટિકિટ આ પોચમપલ્લીની યાદમાં બહાર પાડી હતી ! યુનો દ્વારા પોચમપલ્લીને દુનિયાનાં સર્વશ્રેષ્ઠ પર્યટન સ્થળોમાં સ્થાન આપવામાં આવેલું છે.

ભાવભીની શ્રદ્ધાંજલી



સ્વ. શ્રીમતિ અરૂણાબેન મહેન્દ્રકુમાર કોટડીયા

અરિહંત શરણ : ૧૨-૬-૨૦૨૩

ઘટે છે જીંદગીમાં કંઇક એવો ખ્યાલ આવે છે,
બરાબર એ જ વેળાએ તમારી જ યાદ આવે છે
તમારી યાદ અમને હંમેશા પ્રેરણા આપતી રહેશે
તમારો પ્રેમ, સંવેદના અને જીવનનો પ્રકાશ
અમારા જીવનમાં સદાકાળ રહેશે.
શાંતિ અને સ્નેહ સાથે અમો તમારા આત્માને
ભાવભરી શ્રદ્ધાંજલી અર્પણ કરીએ છીએ....

❀ શ્રદ્ધાસુમન અર્પતા કરતાં ❀

સ્વ. કોટડીયા મીઠાલાલ કચરાલાલ સ્વ. કોટડીયા વિમળાબેન મીઠાલાલ પરિવાર (બેરણા)

કોટડીયા મહેન્દ્રકુમાર મીઠાલાલ (બેરણા-ઈંદોર-મુંબઈ)

કોટડીયા અમિત મહેન્દ્રકુમાર કોટડીયા અભય મહેન્દ્રકુમાર

મિશિકા - ઓજસ અમિતકુમાર કોટડીયા (USA)

આકાંક્ષી - અદ્વીત અભયકુમાર કોટડીયા (અંધેરી-મુંબઈ)

'લોકાધાર' સંરક્ષક ટ્રસ્ટી બનવા બદલ
પરિવારનો આભાર વ્યક્ત કરીએ છીએ

શાહ બાબુલાલ સોમચંદ વિદ્યાશ્રી ફંડ ના સંસ્થાપક નો દેહપરિવર્તન....

ભાવભીની શ્રદ્ધાંજલી



જન્મ : ૦૮/૦૫/૧૯૪૦

અરિહંત શરણ : ૩૦/૦૯/૨૦૨૬

સ્વ. શાહ બાબુલાલ સોમચંદ

(મહાદેવપુરા-મલાડ-મુંબઈ)

સંઘ-મહાસંઘ ના એક પાયોનીયર અને સંઘ-મહાસંઘ અંતર્ગત સ્કોલરશીપ વિતરણ માટે "શાહ બાબુલાલ સોમચંદ વિદ્યાશ્રી ફંડ" ના નિર્માતા નું આપણી વચ્ચેથી વિદાય લીધી જે પરિવાર ઉપરાંત સર્વ સાથીઓ માટે વસમી વિદાય બની ગઈ છે, તેવો તેમનો મળતાવડો-હસમુખો અને પરગજુ સ્વભાવ હતો....

મલાડ દિગંબર જૈન મંદિર - સમાજ વિકાસ મંડળના સંસ્થાપક હતા. તેમના તરફથી વર્ષાબેન બાબુભાઈ પારિતોષિક વિતરણ થતું હતું અને શ્રે.દ.હુ.દિ.જૈન ચોખલા પંચના ઉપપ્રમુખ અને પ્રમુખ તરીકે તથા વિવિધ સંસ્થાઓ થકી છેલ્લા શ્વાસ સુધી તન-મન-ધન થી સેવા કરનાર વિરલ વ્યક્તિત્વ ને ભાવભીની શ્રધ્ધાંજલી અર્પણ કરીએ છીએ.

તેમના 'આત્માની' શાંતિ માટે પ્રભુ પ્રાર્થના....

❖ તિ. શ્રી જૈન યુવા સંઘ મુંબઈ / ગુજરાતી દિગંબર જૈન સમાજ મહાસંઘના ❖

પદાધિકારીઓ / સાંસદો / લોકપ્રતિનિધિ / કારોબારી સભ્યો અને ટ્રસ્ટીઓ....

પ્રથમ પુણ્યતિથી



જન્મ : ૦૪/૧૦/૧૯૩૬

ગામ : સોનાસણ

અરિહંત શરણ : ૧૭/૦૮/૨૦૨૫

હાલ : સલાલ

સ્વ. શ્રી. અરવિંદભાઇ બબાભાઇ ગાંધી

તમે જીવનને ચોક્કસ અર્થ આપ્યો, અને જીવનની સફર પુરૂષાર્થથી પ્રવૃત્તિમય રહી પૂરી કરી.
જે સાર્થકતા અને સંતોષની લાગણી આપી ગયું.
તમે જીંદગીમાં આવી પડનારી સુખ-દુઃખની પરિસ્થિતિઓનો એને જીંદગીમાં આવી પડનારી આંટીઘૂટી ઉકેલવાની સૂઝબૂઝ આપી, જે અમારે મન બીજા બધા વારસા કરતા વધારે મહત્વની અને કિંમતી છે....

❖ શ્રધ્ધા સુમન અર્પણકર્તા ❖

ગાંધી મુકેશકુમાર અરવિંદભાઇ ગાંધી કમલેશકુમાર અરવિંદભાઇ

સમસ્ત ગાંધી પરિવાર

स्वाध्याय करो

स्वाध्याय करो स्वाध्याय करो।
यह वक्त नहीं बर्बाद करो॥

यह समय मिला है अध्ययन का।
तत्वों के चिंतन-मंथन का॥

निज जीवन के परिवर्तन का।
शुद्धातम के अभिनंदन का॥

परद्रव्यों से प्रीति त्यागो।
जिन वचनों से उन्माद करो॥

स्वाध्याय करो स्वाध्याय करो।
यह वक्त नहीं बर्बाद करो॥

नरक निगोदों में कितने।
दुःखों को तूने सहन किया॥

मूक पशु बन पीठों पर।
भारी वजनों को वहन किया॥

देव बना तो भोगों में ही।
जीवन पूरा खपा दिया॥

झेली अनंत वेदनाएं किंतु।
कुछ भी ना सबक लिया॥

तू जन्म-मरण करते-करते।
चारों गतियां में भरमाया॥

चौरासी लाख योनियों में।
तूने ना कहीं सम्बल पाया॥

पर आज कहीं जाकर तूने।
यह मनुष्य भव पाया है॥

अब अनंत कालों में ऐसा।
स्वर्णिम अवसर आया है॥

अपने समीप बैठो कुछ क्षण।
खुद से भी कभी कुछ बात करो॥

अपने अंदर झांको तो सही।
खुद से भी कभी मुलाकात करो॥

दुनियां भर की विकथाओं पर।
तुम ना ये वाद-विवाद करो॥

स्वाध्याय करो स्वाध्याय करो।
यह वक्त नहीं बर्बाद करो॥

रागादि विकारी भावों से।
तू खूब मालिन होता आया॥

अशुचि के दलदल में फंसा।
खुद पर भी नहीं तरस खाया॥

खुद की ही अनंत अविनय की।
खुद का ना कभी सम्मान किया॥

नश्वर धन-दौलत में उलझा।
निज आत्म पर ना ध्यान दिया॥

जागो-जागो हे भव्य ! तुम्हें।
मां जिनवाणी है जगा रही॥

तू पूर्ण सुखी कैसे होगा।
यह रस्ता तुझको बता रही॥

अब भी है समय तू चेत जा।
यह भाग-दौड़ थोड़ी कम कर॥

मत भोगों में यह काल गवां।
निज कल्याण हेतु हो जा तत्पर॥

यह पर-उपकार बाद में करना।
पहले निज उपकार तू कर॥

स्वाध्याय रुपी औषधि द्वारा।
निज आतम का उपचार तू कर॥

होंगी कषाय भी मंद तभी।
और प्रगटेगा आनंद तभी॥

श्रद्धा में होगा परिवर्तन।
ज्ञान में होगा संवर्धन॥

चिंता बदलेगी चिंतन में।
हल्कापन होगा जीवन में॥

बुद्धि होगी तत्क्षण निर्मल।
जीवन भी होगा सहज सरल॥

तो व्यर्थ पूर्ण बातें त्यागो।
जिनवाणी से संवाद करो॥

स्वाध्याय करो स्वाध्याय करो।
यह वक्त नहीं बर्बाद करो॥

"आतम हित का दुर्लभ अवसर महाभाग्य से पाया है
आप सम निज पद पानेको मेरा चित्त हुलसाया है"

ભગવાન આત્મા



(૧૭)

પ્રશ્ન : લોક છ દ્રવ્યસ્વરૂ છે, તેમાં જીવ સપ્તમ દ્રવ્ય થઈ જાય છે ?

ઉત્તર : લોક છે તો છ દ્રવ્યસ્વરૂપ જ, પણ તે જ્ઞેય હોવાથી વ્યક્ત છે અને તેને જાણનાર જીવ તેનાથી ભિન્ન છે તેથી તે અપેક્ષાએ તેને સપ્તમ દ્રવ્ય કહ્યું છે.

(૧૮)

પ્રશ્ન : આત્મદ્રવ્યનો મહિમા વિશેષ છે કે તે દ્રવ્યને લક્ષમાં લેનારી પર્યાયનો મહિમા વિશેષ છે ?

ઉત્તર : આત્મદ્રવ્યનો મહિમા વિશેષ છે. પર્યાય દ્રવ્યનું લક્ષ કરે, ત્યારે મોક્ષમાર્ગની શરૂઆત થાય છે તે અપેક્ષાએ પર્યાયનો મહિમા કહેવાય, પણ પર્યાય તો એક સમયની છે અને દ્રવ્ય તો પર્યાયથી અનંત અનંત ગુણા સામર્થ્યવાળું ત્રિકાળી મહાપ્રભુ છે, તેથી દ્રવ્યનો મહિમા જ વિશેષ છે.

(૧૯)

પ્રશ્ન : નિયમસારમાં સંવર-નિર્જરા-મોક્ષતત્ત્વને પણ સારરૂપ નથી કહ્યું, તેમાં શું રહસ્ય છે ?

ઉત્તર : આત્મા જ એક સર્વ તત્ત્વોમાં સારરૂપ છે. સંવર, નિર્જરા ને મોક્ષ ઉત્પન્ન કરવાની અપેક્ષાએ હિતરૂપ અને સારરૂપ કહેવાય છે તેને પણ અહીં નિયમસારમાં સારરૂપ કહેતા નથી. કેમ કે તે પર્યાય છે, નાશવાન છે, ક્ષણિક છે અને આત્મા તો અવિનાશી ધ્રુવ હોવાથી સારરૂપ છે. સંવરાદિ તત્ત્વો તો નાશ પામવા યોગ્ય ભાવ છે તેનાથી અવિનાશી ભગવાન આત્મા દૂર છે. સમ્યગ્દર્શન -જ્ઞાન-ચારિત્ર-વીર્ય આદિ ભાવો પર્યાયો વિનાશીક હોવાથી સારરૂપ નથી. અવિનાશી ભગવાન આત્મા સારરૂપ હોવાથી વિનાશીક ભાવોથી દૂર છે. આહાહા! પર્યાયની સમીપ ધ્રુવ ભગવાન પડ્યો છે તે જ એક સારરૂપ હોવાથી દ્રષ્ટિમાં લેવા યોગ્ય છે અને બીજું બધું અસારરૂપ છે.

(૨૦)

પ્રશ્ન : ઉપયોગ લક્ષણ કોનું છે ? તેને કોનું અવલંબન છે-કોના અવલંબનથી પ્રગટ થાય છે? તે ઉપયોગની અસ્તિ ક્યા કારણથી છે અને કયા કારણથી નથી?

ઉત્તર : ઉપયોગ આત્માનું લક્ષણ છે, તેને જ્ઞેય પદાર્થોનું આલંબન નથી. આત્માના આલંબનથી ઉપયોગ પ્રગટ થાય છે, બાહ્ય પદાર્થોના આલંબનથી ઉપયોગ પ્રગટ થતો નથી. આત્માને તો પર પદાર્થોનું આલંબન નથી પણ તેના ઉપયોગને પણ બાહ્ય પદાર્થોનું આલંબન નથી. ઉપયોગ લક્ષણને લક્ષ્ય એવા આત્માનું આલંબન છે. પરપદાર્થોના આલંબનથી એટલે કે દેવ-ગુરૂ જિનવાણીના આલંબનથી આત્માનો ઉપયોગ પ્રગટ થતો નથી પણ સ્વના આલંબનથી જ ઉપયોગ પ્રગ થાય છે. ઉપયોગની અસ્તિ જ્ઞેય પદાર્થોને લઈને નથી પણ તે જેનું લક્ષણ છે એવા આત્માથી અસ્તિરૂપ છે. તે ઉપયોગને પરનું આલંબન કેમ હોય? ઘણું વાંચે, ઘણું સાંભળે માટે શુદ્ધિની વૃદ્ધિ થાય છે એમ નથી પણ શુદ્ધિની વૃદ્ધિ આત્માના આલંબને થાય છે.

(૨૧)

પ્રશ્ન : સીમંધરનો અર્થ શું છે ? શું આત્મ સીમંધર છે ?

ઉત્તર : સીમંધર એટલે વસ્તુ મર્યાદાવાળી છે. પ્રભુ તું મર્યાદિત છો, તારી સીમા, તારી મર્યાદા એ છે કે તું રાગમાં ન જાય, રાગને ન કરે, તેથી મર્યાદાનો-સીમાનો ધારક આત્મા પોતે જ સીમંધર છે.

(૨૨)

પ્રશ્ન : દ્રવ્યસ્વભાવમાં વિકાર છે જ નહિ ને કારણપરમાત્માને પાપરૂપ બહાદુર શત્રુસેનાને લૂંટનારો કેમ કહ્યો?

ઉત્તર : એતો પર્યાયથી વાત કરી છે. પર્યાયમાં રાગાદિભાવો છે તે સ્વભાવ સન્મુખ ઢળતા ઉત્પન્ન થતા નથી, તેનો નાશ કર્યો એમ કથનમાત્ર કહેવાય છે. દ્રવ્યસ્વભાવમાં તો રાગાદિભાવો કે સમ્યગ્દર્શન, ચારિત્ર, કેવળજ્ઞાન કે સિદ્ધ પર્યાય એ કોઈ પર્યાય દ્રવ્યસ્વભાવમાં છે જ નહિ, સંસાર-મોક્ષ એ બધી પર્યાયોની રમતું છે. દ્રવ્યસ્વભાવમાં એ પર્યાયો છે જ નહિ. ત્રિકાળી દ્રવ્યસ્વભાવ એકરૂપ છે. એને નથી કાંઈ ગ્રહવું કે નથી કાંઈ છોડવું. જ્ઞાયકભાવ તો શાશ્વત છે જ-ત્રણ કષાયનો અભાવ કરી અતીન્દ્રિય આનંદનો સ્વાદ લેનારા દિગમ્બર સંતોએ અંતરની વાત અજબ ગજબની કરી છે. આવી વાત દિગમ્બર સંતો સિવાય ભરતક્ષેત્રમાં બીજે ક્યાંય નથી. એ દિગંબર સંતો કહે છે કે બધા જીવો સુખી થાવ. કોઈ જીવ દુઃખી ન થાવ, બધાય જીવો મુક્ત દશાને પામો! દરેક આત્માઓ મુક્ત સ્વભાવી જ છે. જેમ ચોખા અને કણથીને ઉત્પન્ન થવાની જમીન જુદી હોય છે. તેમ ચોખ્ખો એટલે મુક્ત ઉત્પન્ન થવાનું સ્થાન ચોખ્ખું એટલે મુક્ત સ્વરૂપથી જ છે. તેના આશ્રયથી મુક્તિ ઉત્પન્ન થાય છે.

સંપત્તિ 'બોલકી' બની જાય નહીં !

એક ધનવાન સ્ત્રી ફાઈવસ્ટાર હોટલમાં પહોંચી. કાઉન્ટર પર જઈને પોતાનો સામાન લઈ જવા માટે હોટલના નોકરોને કહ્યું.

બે મોટરમાં એમનું કુટુંબ હતું અને બે મોટરમાં એમનો સામાન હતો. નોકરો એક પછી એક સામાન લાવવા લાગ્યા. બેગોનો ઢગલો ખડકાઈ ગયો.

ધનવાન સ્ત્રીએ કહ્યું, 'અરે ! હજી મારા દીકરાને લાવ્યા નથી? જાવ, એને લઈ આવો.'

હોટલના મેનેજરે પૂછ્યું, 'શું આપનો દીકરો અપંગ છે? કે પછી ઘણી નાની વયનો છે? એ જાતે ચાલીને આવી શકે ને?'

આ સાંભળતાં જ ધનિક મહિલાનો ગુસ્સો ફાટી ઊઠ્યો, 'અરે ! કેવા બેવકૂફ છો તમે ! મારા જેવી અબજોપતિ સ્ત્રીનો પુત્ર કંઈ ચાલે ખરો? ચાલવાનું તો નિર્ધનને હોય, ધનિકને નહીં. જુઓ, મારો પુત્ર અપંગ નથી અને બાળક પણ નથી. એની ઉંમર તો પંદર વર્ષની છે.'

'તો પછી એને ઊંચકીને લાવવાની જરૂર શી?'

હોટલના મેનેજરે શાંતિથી પરિસ્થિતિ સંભાળી લેતા નોકરોને સૂચના આપી કે આ મહિલાના પુત્રને એક નાના બાળકની જેમ ખૂબ જાળવીને ઊંચકીને લઈ આવો.

થોડેક નોકરો ભેગા મળીને એ ધનિક સ્ત્રીના પુત્રને ઊંચકીને હોટલમાં લઈ આવ્યા. માનવીની મજા એ છે કે એને પામવા કરતાં દેખાડવામાં વધુ રસ છે. મેળવવા કરતાં બતાવવું વધુ ગમે છે.

એની પાસે સંપત્તિ હોય તો એ સંપત્તિ કઈ રીતે 'બોલે' તેનો પ્રયાસ કરે છે. એની પાસે જ્ઞાન હોય તો એ જ્ઞાન કઈ રીતે બહાર આવે એની ગોઠવણ કરે છે. એની પાસે સત્તા હોય તો એ કઈ રીતે પ્રગટ થાય તેનો વિચાર કરે છે. ધીરે ધીરે પ્રદર્શન એ જ એનો પ્રાણ બની જાય છે. દેખાડો કરવો તે જ એનું જીવનધ્યેય બની જાય છે.

એને પ્રદર્શન કરવાની આદત બની જાય છે અને જો યોગ્ય પ્રદર્શન ન થાય તો એને દિલમાં ભારે ઠેસ પહોંચે છે. વખત જતા આવો માનવી મહોરાં પહેરીને જીવવા લાગે છે સમય જતાં એનું એ મહોરું જ તેનો ચહેરો બની જાય છે. એનો પોશાક એ એનું વ્યક્તિત્વ બની જાય છે અને એનો ડોળ કે દંભ એ એની પ્રકૃતિ બની જાય છે.

ધર્મમાં ગણતરી એ ગર્વનું માધ્યમ બની જાય છે !

બે પનિહારી. કૂવાના કાંઠે મીઠી ગોઠડી કરતી હતી. આ એક એવું સ્થાન હતું કે જ્યાં એ પોતાની સખીને હૃદયની વાત કરી શકે. તેમની ઈચ્છા કહે અને મનના માનેલાની નિરાંતે વાતો કરે.

એક પનિહારીએ પોતાના હૃદયની વાત કરતાં કહ્યું, 'ઓહ ! મારા પ્રીતમને તો હું મનથી વરી ચૂકી છું. એને મળ્યા વગર એક દિવસ પણ રહી ન શકું. મને એ રોજ બે વાર અચૂક મળવા આવે છે.'

બીજી પનિહારીએ કહ્યું, 'મારા પ્રિયતમની તો શી વાત કરું ? એક ક્ષણ પણ એના સ્મરણ વિનાની ખાલી હોતી નથી. એ તો ચોવીસે કલાક મળે છે. મને સતત મળતો જ રહે છે. એ કેટલીકવાર આવે ને જાય, એનો મને ખ્યાલ નથી.' પહેલી પનિહારીએ પૂછ્યું, 'આ તે કઈ રીતે બને? તને કેટલીવાર દિવસમાં મળે છે એનોય તને ખ્યાલ નથી?' બીજી પનિહારી કહે, 'એ સતત મારી સાથે જ હોય છે, પછી એમાં ગણતરી કઈ રીતે કરી શકું?' એક સંત બાજુમાં ઊભા ઊભા પનિહારીઓની વાત સાંભળતા હતા. આ બે સખીઓની વાત સાંભળી એ વિચારમાં પડી ગયા. એમને થયું કે હું તો રોજ કેટલી માળા ગણી એની નોંધ રાખું છું. કેટલા ઉપવાસ કર્યા એની યાદી રાખું છું. ગર્વથી ચોમેર એની વાત કરું છું, પણ આજે ખબર પડી કે આ ગણતરી સાવ ખોટી છે. જો પ્રભુને મનથી માનેલો હોય તો એ સતત સાથે રહેવો જોઈએ. કેટલી માળા કરી કે કેટલા ઉપવાસ કર્યા એનું કશું મહત્વ નથી. માળાની ગણતરીને બદલે સતત ભીતરમાં એની રટણા જ ચાલવી જોઈએ. સંતને સખીઓની મીઠી ગોઠડીમાંથી નવા જ સત્યની ઝાંખી થઈ.

જોકે આજે આપણે જોઈએ છે કે બધે ગણતરીને બોલબાલા છે. તપ કે ધ્યાનની ગણતરીર ચાલે તો એનું મૂળ ખોવાઈ જાય છે. ક્યારેક ગણતરી એ ગર્વનું સાધન બને છે. જ્યારે સાચી સાધના તો સ્નેહ જેવી છે. જ્યાં સતત સ્મરણ ચાલતું હોય, એક પળ પણ એનાથી ખાલી ન હોય.

કેટલાક લોકો કેટલીકવાર મંત્રનો જાપ કર્યો કે કેટલી વાર કથા સાંભળી એની ગણતરી કરતા હોય છે. ખરેખર તો ઓ ગણતરી કરવાને બદલે એ વિચારવું જોઈએ કે આમાંથી કેટલું જીવનમાં ઉતાર્યું અને કેટલું ઉતારવાનું બાકી છે.

ગણતરી નહીં, પણ આત્મશોધન એ જ ધર્મપ્રવૃત્તિનો પાયો છે.

કલોલ ડિવિઝન ના પ્રમુખશ્રીને

ભાવભીની શ્રધ્ધાંજલી



જન્મ : ૨૭/૦૮/૧૯૫૩

અરિહંત શરણ : ૦૮/૦૯/૨૦૨૬

સ્વ. શાહ દિલીપભાઇ કસ્તુરચંદ

છેલ્લા કેટલાંક વર્ષોથી સ્વ. દિલીપભાઈ કસ્તુરચંદ શાહ ઉત્તર ગુજરાત ઝોન અંતર્ગત કલોલ ડિવિઝન ના પ્રમુખ તરીકે સેવાઓ આપી રહ્યા હતા. મધ્યાન્હે સૂર્યાસ્ત થતાં સમગ્ર સમાજ અને મહાસંઘના સાથીઓમાં આ ઘટના ઘણી દુઃખદ બની રહી છે. ભગવાન તેમના આત્માને શાંતિ આપે અને પરિવાર ને આઘાત સહન કરવાની શક્તિ આપે તેવી પ્રાર્થના....

સદ્‌ગત ને સંઘ-મહાસંઘ તરફથી હાર્દિક ભાવભીની અંજલી અર્પણ....

❖ લિ. ગુજરાતી દિગંબર જૈન સમાજ મહાસંઘના ❖

સર્વ પદાધિકારીઓ/સાંસદો/લોકપ્રતિનિધિ/કારોબારી સભ્યો તથા કલોલ ડિવિઝનના શોકાકુલ કારોબારી સભ્યો

છઠ્ઠી પુણ્યતિથી



મૂળવતન : ટાકાટુંકા

જન્મ :
તા. ૧-૦૭-૧૯૩૫

(હાલ : ગોરેગામ-મુંબઈ)

સ્વર્ગવાસ
તા.: ૧૧-૧૧-૨૦૨૦

સવિતાબેન અમૃતલાલ શાહ

આપનો પ્રેમાળ અને માયાળુ સ્વભાવ, ધાર્મિકતા, સર્વ સાથે આત્મીયતા,
સદ્‌ભાવના સાથેની પ્રેરણા, એ ક્યારેય ભુલાશે નહીં,
આપ અમારી સાથે જ છો અને ક્યારેય ના વિસરાય એવી સ્મૃતિમાં અંકીત છો.
પ્રભુ આપના આત્માને શાંતિ અર્પે એજ પ્રાર્થના.

❋ શ્રધ્ધાસુમન અર્પણકર્તા પરિવારજનો ❋

સ્વ. શ્રી.અમૃતલાલ જીવરાજ શાહ (અમૃતધામ) પરિવાર

લોકાધાર સમાજ હિતચિંતક સદસ્યોના સ્નેહીસ્વજનોને શ્રદ્ધાસુમન અર્પણ

ત્રીજી પુણ્યતિથી



સ્વ.શ્રી.સુભાષચંદ્ર આર. ગાંધી

મૂળ વતન : જાદર, હાલ : મુંબઈ (ગોરેગાંવ)

જન્મ તા. : ૨૩/૬/૧૯૪૮ • અરિહંત શરણ તા. : ૨૫/૯/૨૦૨૩

રોકી ન શકયા તમને... ભલે એ હજી હૈયુ સ્વીકારતુ નથી. પૂરી ન શકાય એવી ખોટ પડી... કોને કરવી ફરિયાદ હવે, રડી લઈએ એકાંતમા તમને યાદ કરી પ્રભુ તમારા દિવ્ય આત્માને પરમ શાંતિ અર્પે એજ અભ્યર્થના

❋ શ્રદ્ધાસુમન અર્પણકર્તા પરિવારજનો ❋

ઉષાબેન એસ. ગાંધી

પુત્રઃ અમિત ગાંધી	પૌત્રઃ રીધી ગાંધી
પુત્રવધુઃ ઝુલી ગાંધી	ભાઈઃ જયાહરભાઈ ગાંધી
પુત્રઃ સમીર ગાંધી	ભાભીઃ કપીલાબેન ગાંધી
પુત્રવધુઃ નિકિતા ગાંધી	પૌત્રીઃ ટ્વીશા, ખુશી, સાક્ષી

ચતુર્થ પુણ્યતિથી



સ્વ.શ્રી.વિનુભાઈ તલકચંદ શાહ

મૂળ વતન : ઓરાણ, હાલ : હિંમતનગર

જન્મ તા. : ૭/૭/૧૯૫૧ • અરિહંત શરણ તા. : ૨૫/૯/૨૦૨૨

કોઈ અંતરની વાત બહુ જ તકલીફ આપે છે,
સાથે વીતેલી સાંજ ખૂબ જ તકલીફ આપે છે,
રહી તો શકાય છે કોઈના વગર, પણ રહી
ગયેલી કોઈની યાદ ખૂબ જ તકલીફ આપે છે.

❋ શ્રદ્ધાસુમન અર્પણકર્તા પરિવારજનો ❋

ધર્મપત્નીઃ પ્રેમિલાબેન વિનુભાઈ શાહ

પુત્રઃ નેહલકુમાર વિનુભાઈ શાહ	દિકરી/જમાઈ :
પુત્રવધુઃ હેતલબેન નેહલ શાહ	સોનલબેન હિતેશદોશી
પૌત્રઃ આદિ નેહલકુમાર શાહ	સેજલબેન સંદીપ શાહ
પૌત્રીઃ પ્રાપ્તી નેહલકુમાર શાહ	પિંકીબેન અનિલ શાહ

પાંચમી પુણ્યતિથી



માતુશ્રી તારાબેન મણીલાલ કોટડીઆ

સ્વર્ગવાસ : તા.૯/૧૦/૨૦૨૧

માનવજાતિના હોઠ પરના સૌથી સુંદર શબ્દ છે 'મા',

આપનું ધાર્મિક-સામાજિક જીવન, કૌટુંબિક વાત્સલતાના મીઠા સ્મરણોને યાદ કરી નત મસ્તકે શ્રધ્ધાંજલિ અર્પિએ છીએ. પ્રભુ આપના દિવ્ય આત્માને શાશ્વત સુખ અને પરમ શાંતિ અર્પે એજ પ્રાર્થના.

❖ શ્રદ્ધાસુમન અર્પણ કરતાં ❖

સમસ્ત કોટડીઆ પરિવાર

ગામઃ ઓરાણ, હાલઃ મુંબઈ

છઠ્ઠી પુણ્યતિથી



સ્વ.રજનીબેન નરેન્દ્રભાઈ શાહ

જન્મઃ ૭-૪-૧૯૫૯

સ્વર્ગવાસઃ ૧૧-૧૦-૨૦૨૦

મૂળ વતનઃ ઇડર, હાલઃ અમદાવાદ

મા તારી મમતા કુડી છે,
અમારા જીવનની એ મોંઘી મૂડી છે.
વરસ્યા કરે છે તું અમૃત બનીને
એવી મીઠી માડી તું અમને મળી...

સમસ્ત શાહ પરિવાર

છઠ્ઠી પુણ્યતિથી



સ્વ. રસિકલાલ અમૃતલાલ શાહ

જન્મઃ ૧-૫-૧૯૫૦ • સ્વર્ગવાસઃ ૧૪-૧૦-૨૦૨૦

મૂળ વતન : ગોરા, હાલ : નલીદ

અમારા સીમાં ધાર્મિક સંસ્કારોનું સિંચન કરીને, કુટુંબમાં વડીલ તરીકેનું આદર્શ નેતૃત્વ સંભાળીને સમાજમાં પ્રતિષ્ઠાભર્યું સ્થાન અપાવીને વિશાળ પરીવાર અને સર્વે સ્વજન અને સમુદાયને મૂકી આપ ચાલ્યા ગયા. આપના આપેલા સંસ્કારો અમારા જીવનમાં દર પ્રસંગે માર્ગદર્શક બની રહેશે. આપે અમારા પર વરસાવેલો સ્નેહ, પરોપકારી અને માયાળુ સ્વભાવ અમારા અંતરમાં સદાય અંકિત રહેશે. હે પ્રભુ, સદ્‌ગતના દિવ્ય આત્માને પરમ શાંતિ અર્પો એજ પ્રાર્થના.

સમસ્ત શાહ પરિવાર

છઠ્ઠી પુણ્યતિથી



સ્વ.પુનમચંદ નાથાલાલ શાહ

જન્મઃ ૨૧-૯-૧૯૪૧ • સ્વર્ગવાસઃ ૧-૧૦-૨૦૨૦

મૂળ વતન : વાસાણા, હાલ : મુંબઈ

દરેક આંસુની ત્યારે જ કિંમત થાય છે,
દિલની નજીકનું કોઈ જ્યારે દિલથી દૂર થાય છે, દિલાસો માત્ર એટલો જ કે
નસીબ બળવાન છે, બાકી તો જીવનમાં
ન થવાનું ઘણુંય થઈ જાય છે.

સમસ્ત શાહ પરિવાર

લોકાધાર સમાજ હિતચિંતક સદસ્યોના સ્નેહીસ્વજનોને શ્રદ્ધાસુમન અર્પણ

સાતમી પુણ્યતિથી



સ્વ.દોશી નટવરલાલ સોમચંદ

જન્મતારીખ : તા.૨/૧૧/૧૯૩૦

સ્વર્ગવાસ : તા.૧૮/૦૯/૨૦૧૯

'વાણી સૌમ્ય સ્વભાવી જાણે નિર્મળ વહેતાં ઝરણાંનાં નીર. અમૃતથી અધિક પ્રભાવી અને કાર્યકુશળતામાં હતા વીર. આપના ગુણો હવે તસ્વીરમાં જોઈ અવિરત વહે છે અશ્રુનાં નીર.'

પરમ કૃપાળુ પરમાત્મા
પરમ શાંતિ અર્પે એવી પ્રાર્થના.

❖ શ્રદ્ધાસુમન અર્પણ કરતાં ❖

સમસ્ત દોશી પરિવાર

નનાનપુર, હાલ: મુંબઈ

સાતમી પુણ્યતિથી



સ્વ. ચંદ્રિકાબેન અરવિંદકુમાર શાહ

(બોરીવલી-મુંબઈ)

જન્મતારીખ : તા.૨૫/૧૧/૧૯૫૫

સ્વર્ગવાસ : તા.૨૩/૦૯/૨૦૧૯

વિધીના લખ્યા લેખ ક્રૂર થઈ ગયા, હાસ્ય તાણા જળહળીયા આંખોના પુર થઈ ગયા, હજી ઘણી જરૂરીયાત હતી તમારી, પરંતુ તમે તો દૂર થઈ ગયા, જગતની દરેક સમૃધ્ધિ મળશે, પાગ તમારા જેવી કુશળતા ક્યાંય નહી મળે.

શ્રધ્ધા સુમન અર્પતા :

અરવિંદ એન. શાહ અને
સમસ્ત શાહ પરિવાર

નવમી પુણ્યતિથી



સ્વ.મધુબેન અરવિંદકુમાર ગાંધી

સ્વર્ગવાસ તા. : ૦૭/૧૦/૨૦૧૭

આપે સિંચેલ સંસ્કાર વારસો, અમારી આગમોલ મૂડી ! જેમ જેમ ખર્ચતાં જઈએ, વધતી જ જાય, ખૂટે ના કદિ !
આજે આપના દેહાવસાનની
સાતમી પુણ્યતિથીએ આપના ઓજસ્વી અસ્તિત્વને શત્ શત્ નમન કરીએ છીએ!

લિ.અરવિંદકુમાર શંકરલાલ ગાંધી
સમસ્ત ગાંધી પરિવાર-સરડોઈ

૧૧મી પુણ્યતિથીએ શ્રદ્ધાસુમન



સ્વ.જશવંતલાલ ચીમનલાલ શાહ

જન્મતારીખ : ૧૫-૧-૧૯૪૫

સ્વર્ગવાસ તા. : ૧૨-૧૦-૨૦૧૫

આપનું પાર્થિવ શરીર ભલે પંચમહાભુતમાં વિલય પામ્યું પણ સંસ્મરણોના સ્વરૂપે આપ હંમેશા અમારા હૃદયમાં જીવંત છો. આપની લાગણીની હૂંફ, આપની હયાતી અમારૂ આત્મબળ હતું. આપના સંસ્કારો-વ્યવહાર કુશળતા કદી ભુલાશે નહીં.

❀ શ્રદ્ધાસુમન અર્પણ કરતાં ❀

કૌશીકકુમાર જશવંતલાલ શાહ
સાણોદા - અમદાવાદ

બારમી પુણ્યતિથીએ શ્રદ્ધાસુમન



સ્વ.ગાંધી મહેન્દ્રકુમાર નેમચંદ

જન્મતારીખ : ૧૭-૯-૧૯૪૯

સ્વર્ગવાસ તા. : ૨૯-૯-૨૦૧૪

કોઈ અંતરની વાત બહુ જ તકલીફ આપે છે, સાથે વીતેલી સાંજ ખૂબ જ તકલીફ આપે છે, રહી તો શકાય છે કોઈના વગર, પણ રહી ગયેલી કોઈની યાદ ખૂબ જ તકલીફ આપે છે.

❀ શ્રદ્ધાસુમન અર્પણ કરતાં ❀

સમસ્ત ગાંધી પરિવાર
તલોદ - ઉજેડીયા

૧૩મી પુણ્યતિથી



સ્વ. કંચનબેન મીઠાલાલશાહ

જન્મતારીખ: તા.૧/૨/૧૯૪૩ • સ્વર્ગવાસ: તા.૨૮/૦૯/૨૦૧૩

'માં'એ કંટક વગરનો બાગ છે.
જાણે પંખીએ છોડેલો રાગ છે.
'માં' એ પાનખર વગરની વસંત છે.
જાણે મમતાનો સાગર છે.

❖ શ્રદ્ધાસુમન અર્પણ કરતાં ❖

શાહ શૈલેષભાઈ મીઠાલાલ
શાહ રંજનબેન શૈલેષભાઈ
(નવાવાળા)

લોકાધાર સમાજ હિતચિંતક સદસ્યોના સ્નેહીસ્વજનોને શ્રધ્ધાસુમન અર્પણ

૧૩મી પુણ્યતિથી



સ્વ.અશોકભાઈ સાકરલાલ શાહ

(સંઘ-મહાસંઘના ભૂતપૂર્વ અધ્યક્ષ)

જન્મતારીખ : તા.૧૪/૮/૧૯૩૮ • સ્વર્ગવાસ : તા.૧૩/૧૦/૨૦૧૩

સજ્જનતા તમારી સુવાસ હતી, પ્રસન્નતા તમારું જીવન હતું; પરોપકાર તમારું સ્મરણ હતું, ઋતકાર્ય તમારી શોભા હતી. જૈન સમાજનો એવો તારલો જેની વિદાયથી સમગ્ર સમાજ ઘેરા શોકની લાગણી અનુભવે છે. આવી વિરલ વ્યક્તિની વિદાયથી સમગ્ર સમાજને ન પુરાય એવી ખોટ પડી છે.

શ્રધ્ધા સુમન અર્પતા :

શાહ પરિવાર - સંઘ મેનેજમેન્ટ

ગોરેગાંવ (વેસ્ટ), મુંબઈ

૧૫મી પુણ્યતિથી



સ્વ.શ્રીમતી કૈલાસબેન પોપટલાલ

સ્વર્ગવાસ : ૨૮/૯/૨૦૧૦

'માં' પ્રેમ, કરૂણા, સહાનુભુતિ અને ક્ષમાશીલતાનો ઝરો છે. 'માં' જે સઘળાં અસ્તિત્વોનું પ્રારંભિક રૂપ છે. તે અનંત આત્મા છે, સૌંદર્ય અને પ્રેમથી પૂર્ણ.

❖ શ્રધ્ધાસુમન અર્પણ કરતાં ❖

દોશી દિલીપભાઈ પોપટલાલ
તથા સમસ્ત દોશી પરિવાર

નનાનપુર, હાલ - બોરીવલી

૧૬મી પુણ્યતિથી



સ્વ.કાંતિલાલ છગનલાલ દોશી

જન્મ: ૧૦-૭-૧૯૨૭ • સ્વર્ગવાસ: ૨૧-૯-૨૦૧૦

મૂળ વતન : મુડેટી, હાલ : ઈડર

પાપાણ ઝુકે ને તમને નમન થઈ જાય, મસ્તક ઝુકે ને આપને વંદન થઈ જાય, એવી નજર ક્યાંથી લાવીએ કે, યાદ કરીયે ને આપના દર્શન થઈ જાય, આપનો આત્મા મુક્તિ તરફ સતત ગતિ કરે, એવી પરમ કૃપાળુ પરમાત્માને અમારી પ્રાર્થના

સમસ્ત દોશી પરિવાર

સત્તાવીસમી પુણ્યતિથી



સ્વ.મનુભાઈ કોટડિયા

(સ્વ. તા. ૨૧/૯/૧૯૯૭)

વાણી સૌમ્ય સ્વભાવી જાણે નિર્મળ વહેતાં ઝરણાંનાં નીર... અમૃતથી અધિક પ્રભાવી અને કાર્યકુશળતામાં હતા વીર... આપના ગુણો હવે તસ્વીરમાં જોઈ અવિરત વહે છે અશ્રુનાં નીર.'

પરમ કૃપાળુ પરમાત્મા પરમ શાંતિ અર્પે એ પ્રાર્થના.

❀ શ્રધ્ધાસુમન અર્પતા કરતાં ❀

ગં. સ્વ. અરૂણા મનુભાઈ કોટડિયા
હરેશ મનુભાઈ કોટડિયા
વંદના હરેશ કોટડિયા

૨૮મી પુણ્યતિથી



સ્વ. ગાંધી પોપટલાલ પદમશી

પુણ્યતિથી : ૧૩/૯/૧૯૯૮ (મૂળ વતન : રખિયાલ)

વાત્સલ્ય આપી આપે સાચવ્યા અમને રાહ બતાવી જીવન સંભાળ્યા અમને સતત માર્ગદર્શન આપ્યા તમે નત મસ્તક કર્યા જીવન અમે

❖ શ્રધ્ધાસુમન અર્પણ કરતાં ❖

વિજયભાઈ પી. ગાંધી
સમસ્ત ગાંધી પરિવાર

રખિયાલ, હાલ - મુલુંડ

એનાઉન્સમેન્ટ

❖ તારીખ ૦૪/૧૦/૨૦૨૬, રવિવાર ના રોજ મુંબઈ અને તલોદ ખાતે આયોજીત ગુણ ગૌરવ નો અહેવાલ અને ફોટા આગામી અંકમાં આપવામાં આવશે.

❖ સપ્ટેમ્બર/ઓક્ટોબર ૨૦૨૬ શ્રધ્ધાંજલી ના ફોટા પ્રકાશન આ અંકમાં કરવામાં આવેલ છે.

❖ સંજોગોવશાત....

લોકાધાર સમાજ હિતચિંતક સદસ્યોના સ્નેહીસ્વજનોને શ્રદ્ધાસુમન અર્પણ

છઠ્ઠી પુણ્યતિથી



સ્વ.શ્રી.હસમુખલાલ કોદરલાલ શાહ

વતન : વડોદરા (તલોદ)

જન્મ: ૨૭-૦૨-૧૯૪૧/સ્વ: ૧૦-૧૧-૨૦૨૦

દરિયાદીલી જેની નસેનસમાં હતી, કરૂણા અને દિલાવરી જેના દિલમાં હતી, પરોપકાર જેના પગલામાં હતો, એ સ્નેહાળ, હસમુખા અને ઉદાર સર્વત્ર સદ્કાર્યોની સુવાસ ફેલાવી, સંભારણા અમારા દિલમાં રાખી નિરાકારમાં એકાકાર થઈ ગયા.

❋ શ્રદ્ધાસુમન અર્પણકર્તા ❋

ગં.સ્વ.શાહ શાન્તાબેન હસમુખલાલ
રાજેશભાઈ/પ્રજ્ઞેશભાઈ/હીનાબેન
તથા સમસ્ત શાહ પરીવાર

છઠ્ઠી પુણ્યતિથી



સ્વ.શ્રી.રતિલાલ છોટાલાલ શાહ

મૂળવતન : મહાદેવપુરા (હાલ : બોરીવલી-મુંબઈ)

જન્મ: ૧૧-૦૩-૧૯૩૩/સ્વ: ૦૮-૧૧-૨૦૨૦

"જીવન જેમનું હતું ઊત્સવ, મૃત્યુ બન્યું મહોત્સવ." હકારાત્મક વિચારધારાના પુરસ્કર્તા, સાલસ સ્વભાવી, સૌ પ્રત્યે સ્નેહ-આદરભાવ, સદ્કાર્યોમાં સદાય સહયોગી એવા અમારી સ્નેહમૂર્તિને... હે પ્રભુ ! આપજો પરમ શાંતિ.

લિ.ગં.સ્વ.તારાબેન રતિલાલ શાહ
અને સમસ્ત શાહ પરિવાર

સાતમી પુણ્યતિથી



શાહ પ્રવિણાબેન જશવંતલાલ

ધર્મપત્ની : સ્વ.શાહ જશવંતલાલ બુલાખીદાસ

કલોલ નિવાસી, હાલ ગોરેગાંવ

જન્મ તા.: ૨૮/૬/૧૯૩૯

સ્વર્ગવાસ તા.: ૨૨/૧૦/૨૦૧૯

આપે સિંચેલ સંસ્કાર વારસો, અમારી આણમોલ મૂડી ! જેમ જેમ ખર્ચતાં જઈએ, વધતી જ જાય, ખૂટે ના કદિ ! આજે આપના દેહાવસાનની પાંચમી પુણ્યતિથીએ આપના ઓજસ્વી અસ્તિત્વને શત્ શત્ નમન કરીએ છીએ!

લિ.જયેશભાઈ જશવંતલાલ શાહ
અને સમસ્ત શાહ પરિવાર

પંદરમી પુણ્યતિથી



સ્વ.દોશી નરેશભાઈ મગનલાલ

પુણ્યતિથી:૨૭/૧૦/૨૦૧૧

કોઈ અંતરની વાત બહુ જ તકલીફ આપે છે, સાથે વીતેલી સાંજ ખૂબ જ તકલીફ આપે છે, રહી તો શકાય છે કોઈના વગર, પણ રહી ગયેલી કોઈની યાદ ખૂબ જ તકલીફ આપે છે.

લિ. સમસ્ત દોશી પરિવાર
(કોચીન) મુનાઈવાળા

નવમી પુણ્યતિથી



માતુશ્રી હિરાબેન કોદરલાલ શાહ

મૂળગામ : તલોદ (ઉજેડીયા)

પુણ્યતિથી:૩૧-૧૦-૨૦૧૭

'માં', પહેલા આંસુ આવતા ત્યારે તુ યાદ આવતી. હવે તું યાદ આવે છે, અને આંસુ આવે છે ! માનવજાતિના હોઠ પરના સૌથી સુંદર શબ્દ છે 'માં', અભય અને આશિર્વાદ થી અમરતવેલ એટલે 'માં', 'માં' પ્રેમ, કરૂણા, સહાનુભુતિ અને ક્ષમાશીલતાનો ઝરો છે. 'માં' જે સઘળાં અસ્તિત્વોનું પ્રારંભિક રૂપ છે.

લિ. શાહ હસમુખલાલ કોદરલાલ
અને સમસ્ત શાહ પરિવાર

સોળમી પુણ્યતિથી



સ્વ.શ્રી.ચંપકલાલ જે.મહેતા

(સ્વ. તા. ૩/૧૧/૨૦૧૦)

ચોકી ન શક્યા તમને... ગયા એ હજી હૈયુ સ્વીકારતુ નથી. પૂરી ન શકાય એવી ખોટ પડી... ડોને કરવી ફરિયાદ હવે, રડી લઈએ એકાંતમા તમને યાદ કરી પ્રભુ તમારા દિવ્ય આત્માને પરમ શાંતિ અર્પે એજ અભ્યર્થના

❀ શ્રદ્ધાસુમન અર્પતા કરતાં ❀

ગુણવંતીબેન ચંપકલાલ મહેતા તથા
સમસ્ત મહેતા પરિવાર-મોઢુકા, મલાડ



LIFE INSURANCE

- THE FOUNDATION OF YOUR FINANCIAL PLAN!

Life insurance is uniquely different from all other financial products as it has protection of your financial interests in case of an unfortunate event as its core proposition.

Assess your

- Annual Income
- Current & Future Liabilities
- Existing Insurance Cover
- Your Current Age
- Financial Dependency of the Family

Before opting for a suitable cover and adequate sum assured.

Divyesh H Shah
+91 98205 16806

Smeet D Shah
+91 98209 86806

www.shahfinancialservices.in

REGISTERED WITH REGISTRAR OF NEWSPAPER UNDER RNI NO. MAHGUJ/2005/15912
POSTAL REGD. NO. MCS/052/2024-26 • WPP License No. MR / Tech / WPP-297 / South / 2024-26
LOKADHAR Published on 15TH OCTOBER 2026 Posted at Mumbai Patrika Channel Sorting Office, Mumbai-400 001 on 19th & 20th of Every month

ધોરણ ૧૦ અને ૧૨ ધોરણના ૯૦% થી વધુ ગુણ મેળવનાર વિદ્યાર્થી/વિદ્યાર્થીનીને સમાજના તેજસ્વી તારલાઓને હાર્દિક અભિનંદન

નોંધ : સમયસર ફોટા મળવા છતાં શરતચૂક અને ભૂલ થી ફોટા અગાઉના અંકમાં પ્રકાશિત ન હોતા થયા તેથી અત્રે....



જીમીત દિપક મહેતા
ધોરણ ૧૦-મલાડ (ઈસ્ટ)
(૯૮.૨૦%)



કવિશ અપૂર્વકુમાર શાહ
ધોરણ ૧૦-ભાયંદર (વેસ્ટ)
(૯૫.૬૦%)



જૈની હેતલકુમાર
ધોરણ ૧૦-હિંમતનગર
(૯૨%)



આયુષ અંકિત શાહ
ધોરણ ૧૨ (સાયન્સ)
અમદાવાદ (૯૭.૮૮%)

લોકાધાર સંરક્ષક ટ્રસ્ટી

૧) શાહ વિજયભાઈ ચંદુલાલ મોહનલાલ (ટ્રેઝર ગ્રુપ-અંધેરી)
૨) શ્રી દિગંબર જૈન સમાજ-અલકાપુરી વડોદરા દ્વારા સંચાલિત
શ્રી ૧૦૦૮ ચિંતામણી પાર્શ્વનાથ દિગમ્બર જૈન મંદિર, ગોત્રી રોડ, વડોદરા.
૩) સ્વ.શાહ શાંતાબેન ભોગીલાલ મગનલાલ (ભોજવાળા)
૪) શાહ ચંદ્રેશભાઈ અમૃતલાલ (USA); ૫) ગાંધી નિખિલ સેવંતીલાલ અમૃતલાલ (સોનાસણ-અમદાવાદ)
૬) પુણ્યોદય તીર્થક્ષેત્ર, શ્રી પાર્શ્વનાથ દિગંબર જૈન મંદિર, શિરસાડ (વિરાર) હ. શ્રી.બિપિનભાઈ મહેતા
૭) શાહ કાન્તાબેન કાન્તિલાલ કેશવલાલ પરિવાર, ઉજેડીયા (તલોદ-વડોદરા)
૮) શાહ મગનલાલ નાથાલાલ, ભોજવાળા (હ.મોનીશ પ્રતિક મહેશચંદ્ર શાહ-વડોદરા)
૯) કોટડીયા ચેતનાબેન સુભાષચંદ્ર સોમચંદ (વાપી)
૧૦) શ્રી શાહ સી.એમ. (છગનકાકા) તથા શ્રીમતિ કમળાબેન સી.એમ.શાહ તથા તેમનો પરિવાર (સાક્ષમા-લંડન)
૧૧) ગાંધી વિમળાબેન દિનેશચંદ્ર ચંદુલાલ હસ્તે: સ્વ.ડો.પૂર્વી,અપૂર્વ, સેજલ, અનેરી, આરવ, સોનાસણ (અમદાવાદ)
૧૨) સંસ્થાપક શ્રી. વિનોદચંદ્ર ચુનીલાલ ગાંધી, સી. એ. (મુંબઈ-ગોરા)
૧૩) સ્વ. કોટડીયા અરૂણાબેન મહેન્દ્રકુમાર બેરાગા-ઈન્દોર (હસ્તે : સુપુત્રો ચિ.અમિત/ચિ.અભય)

'લોકાધાર' અંગે પત્રવ્યવહારનું સરનામું :
તંત્રીશ્રી - શ્રી જૈન યુવા સંઘ,
આર.કે.બિલ્ડિંગ નં.૩,
૮મી ખેતવાડી, મુંબઈ - ૪૦૦ ૦૦૪.
ફોન : (૦૨૨) ૬૬૩૩ ૭૪૭૯
મોબા.: ૯૩૨૪૫ ૦૮૦૫૬ (જે.પી.)

Printer & Publisher: On behalf of Jain Yuva Sangh, Vasant M. Kotadia printed LOKADHAR at Pakhri Printing Press, 312/A, Byculla Service Ind. Estate, Dadaji Kondev Cross Road, Byculla, Mumbai-400 027 & Published at 8th Khetwadi, R.K.Bldg. No.3, Mumbai-400 004. • Tel. : (022) 6633 7479
Editor: Pankaj B.Shah, 8th Khetwadi, R.K.Bldg. No.3, Mumbai-400 004.